Vol. I
No. 7

Tuesday
2nd March, 1954

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

	Pages
L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal and Town Committees (Amending) Bill, 1954, introduced	313
Supplementary Demands for Grants	313
Demand No. 3—Legislative Secretariat—Rs. 1,13,000	313–317
Demand No. 5—Industries & Supplies—Rs. 4,98,000	317–318
Demand No. 9—Commutation of Pension Financed from Ordinary Revenues—Rs. 4,29,000	318
Demand No. 14—Appropriation to the Contingent Fund Rs. 1,00,00,000	318–324
Demand No. 8—Territorial and Political pensions—Rs. 12,71,000	324–325
Demand No. 3—General Administration—Rs. 2,08,400	325–346

Note :—*At the beginning of the Speech denotes confirmation not received.

GOVERNMENT PRESS
HYDERABAD-DN.
[illegible]

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 2nd March, 1954.

The House Met at Half Past Two of the Clock.

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

Questions and Answers

(SEE PART I)

L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal And Town Committees (Amending) Bill, 1954.

The Minister for Local Government and Education (Shri Gopal Rao Ekbote) : I beg to introduce L. A. Bill No. IV of 1954, the Hyderabad Municipal and Town Committees (Amending) Bill, 1954.

Mr. Speaker : The Bill is introduced.

Supplementary Demands for Grants

Demand No. 3—Legislative Secretariat—
Rs. 1,13,000

Shri Gopal Rao Ekbote : I beg to move :

"That a further sum not exceeding Rs. 1,13,000 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved.

Necessity of a Printing Press to the Legislative Assembly

Shri J. Anand Rao (Sirsilla-General) : I beg to move :

That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1.

Mr. Speaker : Motion moved.

* شری جے . آنندراؤ - مسٹر اسپیکر سر - جو ترمیم میں نے پیش کی ہے اگرچہکہ معمولی سی معلوم ہوتی ہے لیکن اس کی حد درجہ اہمیت ہے - اسمبلی کی جو کارروائیاں ہوتی ہیں وہ گورنمنٹ پریس میں پرنٹ (Print) کی جاتی ہیں - وہاں کام کی کثرت کی وجہ سے کام بر وقت انجام نہیں پا سکنا جس کی وجہ سے یہ ترمیم ہم کو لانی پڑی ہے کہ اسمبلی کے لئے ایک علحدہ پریس ہونا چاہیئے - یہ اسمبلی سپریم باڈی (Supreme Body) ہے - یہاں کی کارروائیاں بر وقت طبع ہونی چاہئیں تا کہ وقت پر ان کی تقسیم عمل میں آسکے - گورنمنٹ پریس میں اسٹاف کی کمی کی وجہ سے فینانس ڈپارٹمنٹ نے یہ وعدہ کیا تھا کہ یہاں کے کام کے لئے علحدہ انتظام کیا جائیگا - لیکن اب تک کوئی سپریٹ (Separate) انتظام نہیں کیا گیا ہے - میں سمجھتا ہوں کہ اس ترمیم کی معقولیت کے اعتبار سے اس پر کسی کو اعتراض نہیں ہوگا اس لئے میں مودبانہ عرض کروں گا کہ اس کو قبول کیا جائے -

श्री. व्ही. डी. देशपांडे (अिप्पागुडा) : मिस्टर स्पीकर सर, अिस कटौती प्रस्ताव के जरिये जो चीज हाअुस के सामने आअी है अुसकी तरफ मैंने माननीय सभागृह की तवज्जह अिसके पहले भी दिलाअी थी और आनरेबल मिनिस्टर फार कॉमर्स अॅंड अिंडस्ट्रीज ने यह वायदा किया था कि काअिंदा रिपोर्ट वगैरा बरवक्त छपवाकर हाअुस को दिये जायेंगे। चुनाचे पिछले अेक सेशन के पहले सेशन के रिपोर्टस् मेंबरों को मिले हं, लेकिन हम देखते हैं कि अेक साल खतम होने तक अुस साल की प्रोसीडिंग्ज (Proceedings) के रिपोर्टस् मेंबरोंको नहीं मिलते हैं तो जो मवाद अुस साल में अिस हाअुस के सामने आया है अुसका अिस्तेमाल करने में या अुससे फायदा अुठाने में मेंबरों को दिक्कत महसूस होती है। अिसलिये यह जरूरी है कि हाअुस का काम खतम होने के बाद जितनी जल्द हो सके अुतनी जल्द प्रोसीडिंग की रिपोर्टस् मेंबरों को मिलनी चाहिये। में समझता हूं कि यह अुसी सूरत में मुमकिन होगा जब कि असेंबली के लिये अेक अलग प्रेस मुहैया किया किया जाय।

दूसरी बात यह है कि आजकल सिर्फ अंग्रेजी में ही हमें तमाम मवाद मिलता है, लेकिन हैदराबाद स्टेट जिस तरह का आज है अुसमें अिसकी जरूरत है कि तेलुगु, मराठी, कानडी और अुर्दू अिन तमाम जबानों में जो भी मेंबर की मादरी जबान हो अुसमें अुसको सब मटीरियल मिलना चाहियें, असके लिये अिन्तजाम करना जरूरी समझा जाय तो फिर गवर्नमेंट प्रेस के लिये काफी काम बढता और अुस हालत में भी असेंबली के लिये अेक अलग प्रेस होना में मुनासिब समझता हूं। अिस ष्टि से फायनान्स डिपार्टमेंट अिस पर गौर करे तो ज्यादा मुनासिब होगा। हम से यह कहा गय है कि अिसके लिये अेक लाख रुपये की जरूरत होगी, लेकिन सप्लीमेंटरी डिमांडज के तहत असेंब्ली प्रिंटिंग के लिये अेक लाख रुपये का प्रपोजल हमारे सामने आया है। अैसी हालत में अेक अलग

प्रेस का ही अिन्तजाम क्यों न किया जाय यह भी सोचने की बात है। जैसा कि हम देख रहे हैं आज-कल जो अिन्तजाम है खासकर आज के गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस के जो आफिसर्स अिनचार्ज हैं अुनकी तरफ से बरवक्त काम पूरा नहीं किया जा रहा है। खासकर जो प्रेस के डायरेक्टर हैं वे अिस चीज की तरफ नहीं देख रहे हैं और वह अेक नान-टेकनीकल आय.अे.अेस. शख्स हैं। वास्तव में असेंबली के काम के लिये अेक स्पेशल विंग (Special Wing) का अिन्तजाम किया जाना चाहिये था। और यहां का काम अेक प्रायारिटी (Priority) के तौर पर वक्त पर किया जाना चाहिये था। लेकिन हम देखते हैं कि वह नहीं होता है। अैसी हालत में जब यह काम नहीं हो रहा है तो जिम्मेदार अफसरों के खिलाफ डिसिप्लिनरी अेक्शन (Disciplinary Action) लिया जाना चाहिये था। अिस लिहाज से भी मैं मुनासिब समझता हूं कि अिस चीज की तरफ खास तवज्जह देकर अेक अलग प्रेस असेंबली के लिये रखा जाय तो ठीक होगा।

مسٹر اسپیکر - کیا سوالات کے جوابات وغیرہ بھی آپ کو نہیں مل رہے ہیں ؟

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—वह भी नहीं मिला है।

مسٹر اسپیکر - اس کا انتظام کیا گیا تھا کہ سوالات کے جوابات الگ چھپائے جائیں -

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—अैसा कोअी अिन्तजाम अब तक नहीं हुआ है और न हमको अैसे कोअी सवालात भी छपकर मिले हैं।

श्री. वि. के. कोरटकर :—मिस्टर स्पीकर सर, अक्तूबर सेशन तक की पूरी कार्रवाअी छपकर भेजी जा चुकी है। सिर्फ अेक सेशन की रह गअी है। यह छप रहा है, मुझे अेक चीज की याद आ रही है कि अेक शख्स ३१ दिसंबर को सो जाता था और पहली जनवरी को सुबह अुठता था तो कहता था कि मै सालभर सो गया था, वैसी ही बात है। सिर्फ आखरी सेशन की कार्रवाअी छपने की रह गअी है बाकी सब छपवाकर भेज दी गअी है।

अिस बात पर जोर दिया जा रहा है कि असेंबली के लिये अेक प्रेस अलग होना चाहिये। अिसके बारे में मुझे सिर्फ अितना ही कहना है कि यह तहरीक पहले शायद असेंबली से भी आअी थी लेकिन यह चीज प्रेक्टीकल नहीं है। असेंबली का काम सिर्फ चार महीने होता है और चार महीने के बाद प्रेस फिर नहीं चल सकता। अैसे टेंपररी (Temporary) काम के लिये कहीं भी अलग प्रेस नहीं हुआ करता और किसी भी असेंबली में अैसा अलग प्रेस नहीं है। पिछले वक्त, लैंड सेटलमेंट के वक्त भी तीन दिन में सारा काम छपवाकर देना पडा था। अुस वक्त अगर असेंबली का अलग प्रेस होता तो मैं यकीनन कहता हूं कि जो काम तीन दिन में हुआ था वह महीने भर में भी नहीं हो सकता था। क्योंकि अितना बडा प्रेस जोकि आज गवर्नमेंट का है वैसा असेंबली नहीं रख सकती। यह प्रेक्टीकल (Practical) चीज है नहीं। सिर्फ सोचने से बहुत मालूम होता है कि अिधर अुधर कर के प्रेस रख दिया और यह किया और वह किया तो सब कुछ छप गया। लेकिन काम करने बैठते हैं तो अैसा नहीं होता। जिनको तजरुबा है अुनकी भी जरा सुनली जाय तो ठीक होगा।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:— : क्या असेंबली के लिये आज के प्रेस में अेक स्पेशल विंग भी नहीं रखाकताजसा ?

श्री. वि. के. कोरटकर :—जिस वक्त काम होता है अुस वक्त स्पेशल काम किया जाता है। अुस वक्त स्पेशल आर्डर्स लेकर असेंबली के काम के लिये डबल शिफ्ट में काम किया जाता है, जोकि आर्डिनरी (Ordinary) तरीके से या अे. जी. के रूल्स के मुताबिक नहीं किया जा सकता अैसा काम आज किया जा रहा है ।

شری گوپال راؤ اکبوٹے۔ مسٹر اسپیکرسر۔ دو تین عذرات کئے جارہے ہیں۔ پہلا عذر یہ ہے کہ اسمبلی کے ڈیبیٹس (Debates) نہ وقت پر چھپتے ہیں اور نہ تقسیم ہوتے ہیں ۔ لیکن جیسا کہ آنریبل منسٹر نے ابھی فرمایا کہ صرف تھرڈ سیشن (3rd Session) کے ڈیبیٹس تقسیم ہونا باقی ہے بقیہ دوسرے سیشنس کے مکمل ڈیبیٹس تقسیم ہوچکے ہیں ۔ دوسرے میٹیریل کی تقسیم کے تعلق سے میں سمجھتا ہوں کہ اب تک کسی کو کوئی اعتراض نہیں ہوا ہے ۔ وہ برابر تقسیم ہورہے ہیں۔ میں یہ مانتا ہوں کہ اسمبلی سپریم باڈی (Supreme Body) ہے۔ اس کا لٹریچر بر وقت طبع و تقسیم ہونا چاہیئے۔ سوال یہ ہے کہ کیا علحدہ پریس کے ذریعہ اس مسئلہ کو حل کیا جائے یا موجودہ پریس کے ذریعہ اس مقصد کو حاصل کیا جائے۔ اس سلسلہ میں دو پروپوزلس (Proposals) آئے ہیں ۔ ایک یہ ہے کہ موجودہ پریس میں ایک علحدہ ونگ (Wing) کھولا جائے جو اسمبلی کے کام کو انجام دے سکے ۔ اور دوسرا آلٹرنیٹیو (Alternative) یہ ہے کہ موجودہ بریس میں ہی ڈبل شفٹ سسٹم کے ذریعہ کام کی رفتار کو تیز کیا جائے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اگر آنریبل ممبرس واقعات سے واقف ہوتے تو ایسے سوجھاؤ کی ضرورت پیش نہ آتی ۔ بات یہ ہے کہ پہلے سے ایک ونگ (Wing) علحدہ قائم کیا گیا ہے ۔ وہ ڈبل شفٹ (Double Shift) میں کام کررہا ہے ۔ کام کی تکمیل تیزی سے ہورہی ہے۔ چنانچہ تھرڈ سیشن کے ڈیبیٹس کے سوا باقی تمام ڈیبیٹس تقسیم ہوچکے ہیں ۔ موجودہ پریس میں ایک علحدہ ونگ قائم کیا گیا ہے جو ٹو شفٹس (Two Shifts) میں کام کررہا ہے ۔ اس کام کی طرف پوری توجہ کی جارہی ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اب کسی قسم کی شکایت کا موقع نہیں رہے گا ۔ علحدہ پریس کے قیام کے بارے میں سرسری طور پر دیکھنے میں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ یہ بہت آسان بات ہے ۔ لیکن اس مسئلہ پر غور کیا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہ ناممکن سی بات ہے۔ حکومت کے پاس خود لیجسلیٹیو اسمبلی سے تحریک آئی تھی۔ مختلف آلٹرنیٹیوز (Alternatives) پر غور کیا گیا اور اکسپرٹس (Experts) سے اس کی جانچ کرائی گئی ۔ ان کی رائے یہ ہوئی کہ محض اسمبلی کے لئے ایک علحدہ پریس قائم کیا جائے تو کچھ پرافٹیبل (Profitable) نہیں ہوگا ۔ لیگل ڈپارٹمنٹ اور لیجسلیٹیو اسمبلی دونوں سکریٹریٹس کا کام اس علحدہ مطبع سے لیا جائے تو اس میں شک نہیں کہ

کام کافی ہوگا لیکن یہ بھی پرافٹیبل نہیں ثابت ہوگا - ایک بل پہلے لیگل سکریٹریٹ سے چھپتا ہے اور پھر لیجسلیٹیو اسمبلی سے چھپتا ہے - پہلے یہ سمجھا گیا تھا کہ اس کام کے لئے دونوں کو کوآرڈینیٹ (Coordinate) کر کے ایک جگہ چھاپنے کا انتظام کیا جائے تو سہولت ہوگی - اس پر بھی غور کیا گیا کہ پانچ چھ لاکھ روپیہ کے سرمایہ سے ایک علحدہ پریس اسمبلی کے لئے قائم کیا جائے - اس بارے میں اکسپرٹس سے جانچ کرائی گئی - اندازہ کیا گیا ہے کہ اس پر چھ لاکھ روپیہ خرچ ہوں گے اور ریکرنگ اکسپنسس (Recurring expenses) کے لئے ایک لاکھ ۱۷ ہزار روپیہ صرف ہوں گے - آنریبل ممبرس مجھ سے متفق ہوں گے کہ پیسوں کے خرچ کے لحاظ سے یہ معاملہ کچھ پرافٹیبل نہیں ہوگا البتہ تیز رفتاری کا جو سوال ہے اس کا انتظام تو دوسرے طریقے سے ہم نے کیا ہی ہے - وہاں جس مقدار میں مشنری ہے اوس کے لحاظ سے جس حد تک ایفشینسی (Efficiency) بڑھ سکتی ہے اس کو بڑھانے کی کوشش کی جارہی ہے - مجھے امید ہے کہ آئندہ اس پر کسی کو اعتراض کا موقع نہیں ملیگا -

شری جے - آنند راؤ - مسٹر اسپیکر سر - چونکہ منسٹر صاحب متعلقہ نے یقین دلایا ہے اسلئے میں اپنا کٹ موشن ودڈرا کرتا ہوں -

I beg leave of the house to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the house, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

"That a further sum not exceeding Rs. 1,13,000 under demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 5—Industries & Supplies Rs. 4,93,000.

The Minister for finance, statistics, Customs, Commerce & Industries (Shri V. K. Koratkar) : I beg to move :

"That a further sum not exceeding Rs. 4,93,000 under demand No. 5 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved.

Demand No. 9—Commutation of Pensions Financed from Ordinary Revenues—Rs. 4,29,000.

Shri V. K. Koratkar : I beg to move :

"That a further sum not exceeding Rs. 4,29,000 under demand No. 9 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved.

Demand No. 14—Appropriation to the Contingency Fund—Rs. 1,00,00,000.

Shri V. K. Koratkar : I beg to move :

"That a further sum not exceeding Rs. 1,00,00,000 under demand No. 14 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved.

Failure of Government to take measures against closure of Industries

Shri V. D. Deshpande : I beg to move :

"That the grant under demand No. 5 be reduced by Re. 1."

Mr. Speaker : Motion moved.

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—

मिस्टर स्पीकर सर, मैने जिस सिलसिले में कटमोशन रखा है वह सनअतों के बंद होने के मुताल्लुक है। कल हाउस के सामने आनरेबल मिनिस्टर फार फायनान्स ने जो तकरीर फरमाओ उसमें यह उम्मीद दिलाओ कि अेकाध दूसरा कारखाना बंद हो रहा है, आम तौर पर मआशी हालत अच्छी है, सनतों की तरक्की हो रही है, प्रोडक्शन बढ रहा है और कोओ अलार्मिंग सिच्च्यूअेशन (Alarming situation) नहीं है। मुझे अफसोस के साथ कहना पड रहा है कि उन्होंने कहा कि कोओ काम्प्लीसेंट अेटीट्यूड (Complacent Attitude) हुकूमत की नहीं है लेकिन मैने तो कम से कम उनकी तकरीर काम्प्लीसेंट (Complacent) पाओ। जिस चीज को हाउस के सामने चार महीने से रखा जा

रहा है कि सिकंदराबाद में जो पुरानी मिल के नाम से अेक मिल मशहूर है वहां के १८०० मजदूर बेरोजगार होनेवाले हैं । वहां के मजदूरों की तरफ से अेक पिटीशन भी हुकूमत के सामने रखी गअी थी । जब कि मिल बंद होने के अिमकानात थे और अुसके बाद जब मिल बंद हो गयी तब भी अेक पिटीशन रखी गयी । मिनिस्टर फार कामर्स अेंड अिंडस्ट्रीज के पास वहां के मजदूरों की तरफ से अेक डेप्यूटेशन (Deputation) भी भेजा गया और अुनसे बातचीत भी की गअी । मै खुद अुस वक्त वहां हाजिर था । चीफ मिनिस्टर साहब से भी हम मिले थे और अुन्होंने यह यकीन दिलाया था कि मै मिल के मेनेजिंग अेजंट को बुला रहा हूं और मै यह कोशिश करूंगा कि अिस मिल को चालू रखा जाय । अिन तमाम कोशिशों के बावजूद यह मिल अब बंद है । अिसके बाद जो हालत हुअी अुसको मै मुख्तसरन हाअुस के सामने रखना चाहता हूं ।

अिस मिल की जानिब से कोर्ट से यह मांग की गअी थी कि चूंकि हम अिस मिल को चला नहीं सकते लिहाजा हमको मिल बंद करने का हुक्म दिया जाय । अदालत ने अुनके अुजरात को सुनकर यह हुक्म दिया कि जो रीजन्स (Reasons) अदालत के सामने पेश किये है अुनको देखकर मिल को बंद नहीं किया जा सकता । अुसके बाद फिर अिस मिल की तरफ से हुकूमत को नोटीस दी गअी कि हमारे पास माल नहीं है अिसलिये हम बंद कर रहे हैं । हुकूमत हैदराबाद की तरफ से मिल की मेनेजमेंट को नोटीस दिया गया कि अिंडस्ट्रियल डिस्प्यूटस अेक्ट के तहत आपने जो अुजरात पेश किये है वे ठीक नही मालूम होते । अिसलिये हम हुक्म देते हैं कि मिल बंद न की जाय, लेकिन मिल के मालिकोंने अिसको भी नहीं माना । अिसके बाद यह मिल का क्लोजर (Closure) है या लाक औट (Lock-out) है अिस चीज का तसफीया करवाने के लिये अिस मामले को हुकूमत की तरफ से अिंडस्ट्रियल ट्रिब्यूनल (Industrial Tribunal) के पास भी भेजा गया । चूंकि यह फैसला होना था अिसलिये करीब अेक महीने से आज तक अुन मजदूरों को हाफ पे (Half-pay) या अलाअुन्स (Allowance) मिला करता था, लेकिन आज या कल से वह भी बंद होनेवाला है और शायद कल या परसों से अुन तमाम मजदूरों को भूख का मुकाबला करना पडेगा । यह हुकूमत के सामने अेक बहुत बडा सवाल है, कि अिस मसले को कैसे हल किया जाय । अगर दिन ब दिन अिस तरह से कारखाने बंद होते चले जायेंगे और अुनके लिये अगर हुकूमत कोअी ठीक रास्ता न निकाले तो मै समझने से कासीर हूं कि किस तरह से बढते हुअे बेरोजगारी के सवाल को हल किया जा सकता है । हमारे सामने बार बार कहा जाता है कि यह कल्याणकारी स्टेट है और मै भी चाह रहा हूं कि यह कल्याणकारी स्टेट बने, लेकिन वह कल्याण-किन वर्गोंका होगा यह हमारे सामने सवाल है । क्या वह कल्याणकारी राज्य अभी चीफ मिनिस्टर साहब जिनके बारे में कह रहेथे अुनका होगा या मेहनतकश अव्वाम किसान और मजदूर का होगा ? अिस लिहाज से हम महसूस कर रहे हैं कि आज की हुकूमत की सनअती पालिसी जिस तरह की है अुसी पर वह चलती जाय तो बेरोजगारी बढनेवाली है, वह कम होनेवाली नहीं है । यह भी हाअुस के सामने हुकूमत की तरफ से रखा जाता है कि हम मजबूर हैं, कारखाने चला नहीं सकते और हमको हक भी नहीं है कि हम अुनको मजबूर कर सकें, लेकिन मै यह कहना चाहता हूं कि हुकूमते हिंद ने जो अभी कानून पास किया है कि अगर मिस मेनजमेंट (Mismanagement)

की वजह से कोअी कारखाना बंद होता है तो हुकूमत अुसको अपने कब्जे में लेकर चला सकती है। तो अिस मिल में भी अुस तरह का कोअी मिसमेनेजमेंट वगैरा हुआ है या नहीं अिसको भी हुकूमत को देखना चाहिये और जरूरी होगा तो अुसको अपने कब्जे में लेकर चलाना चाहिये। हमारा तो यह भी कहना है कि अगर अदालत भी कहती है कि यह कारखाना नहीं चल सकता तो भी अुसको चलाना हुकूमत के लिये लाजमी हो जाता है, क्योंकि अगर बारिश नहीं हुअी, तो फसल नहीं होती, अूपर से खुदा का हुक्म आता है कि कि फलां अेरिया के अंदर बारिश नहीं आ-येगी, फसल पैदा नही होगी, अनाज नही होगा, और लोग नहीं खायेंगे तो मर जायेंगे और कहत होगा और लोग भूखे रहेंगे या मर जायेंगे। कल अगर बीड डिस्ट्रिक्ट के अंदर फसल नही हुअी लिहाजा लोग भूखे मर जायें क्या अैसा हुकूमत करती है। लेकिन अुस वक्त कोअी भूतदयावादी भी कहता है कि नहीं, अुनको अनाज देना चाहिये क्योंकि वहां कुछ पैदा नहीं हुआ है। अुसी तरह से जब किसी कारखाने को नहीं चलाया जा रहा है तो क्या अिस मिल के हजारों लोगों को बेरोजगार रखेंगे और कारखाने को हम नहीं चलायेंगे? अगर अदालत का भी फैसला है कि मशीनरी पुरानी है अिसलिये अुसको बंद किया जा सकताहै तो क्या अेक वेलफेअर स्टेटका यह फर्ज नहीं होता कि वह अुस कारखाने को चलाये? जरूरत हुअी तो हुकूमत को अेक कानून बनाना पडेगा या और कोअी तरीका अिस्तेमाल करना पडेगा जिससे वह कारखाना चल सके। अिस कारखाने को चलाना कोअी मुश्किल बात नहीं है। मैं समझता हूं कि करीब करीब ५ लाख रुपयों में ही मालिक ने अिस मिल को कदीम जमाने में खरीदा था। जहां तक मैंने सुना है, आज हुकूमत भी दस लाख रुपये मशीनरी लाने के लिये देने को तैयार है। अैसी हालत में मजदूरों की तरफ से मैं यह कहना चाहता हूं कि जरूरत पडी तो मजदूर अपने प्राव्हिडंट फंड (Provident fund) का पैसा या दीगर फैसीलिटीज (Facilities) अिसमें अिनव्हेस्ट (Invest) करने के लिये तैयार हैं ताकि सरमाये के तौर पर वह मिल में लगाया जा सके और मिल भी चालू रहे। अिससे ज्यादा तो वह कुछ नहीं कर सकते। अिस तरह से हुकूमत का कर्ज मजदूरों के प्राव्हीडंट फंड के पैसेसे कुछ रनिंग कैपीटल (Running capital) के तौर पर अिमदाद दी जाती है तो आज की यह मिल चलाना मुश्किल नहीं है। मैं हुकूमत से कहूंगा कि अेक टेस्ट (Test) केस (Case) की तरह यह कारखाने का सवाल हमारे सामने आया है और अगर हम समझते है कि बेरोजगारी का सवाल हम हल करने जा रहे हैं तो अिस वक्त हुकूमत को कदम अुठाना जरूरी हो गया है और अिसी सिलसिले में मेरा यह कटमोशन है। जब मैंने अिस पर अेक अेडजर्नमेंट मोशन (Adjournment motion) पेश किया था तो अुस वक्त स्पीकर साहब ने कहा था कि यह मसला आप डिमांडज के वक्त हाअुस के सामने रख सकते हैं। अिसलिय मैं हुकूमत के सामने रख रहा हूं कि अिन लोगों के भूख का सवाल कल से हमारे सामने पेश हो रहा है। अिस वक्त आरजी तौर पर कोअी काम किया जा सकता है तो अुस पर हुकूमत को सोंचना चाहिये। मुझे यह बताया गया है कि अर्बन अनअेम्प्लायमेंट (Urban unemployment) नाम का कोअी फंड हुकूमत के पास है और अुसमें से अनअेम्प्लाअिड (Unemployed) लोगों को अिमदाद दी जा सकती है। मै यह भी कहूंगा कि अगर अिसके लिये हुकूमत हिंद के रजामंदी की जरूरत हो तो फौरन अुनके साथ बातचीत की जाय और अिस फंड से लोगों को अिमदाद दी जाय।

तीसरी बात मै यह कहना चाहता हूं कि अभी अिंडस्ट्रियल कोर्ट के सामने अिस मामले के बारे में कार्यवाही चल रही है। जब तक वह खतम नही होता तब तक अुनको अलाअुन्स या हाफ पे (Half pay) जिस तरह से गुजिश्ता अेक महीने तक दिया जाता था अुसी तरह से दिया जान चाहिये। दूसरा अेक सुझाव मै रखना चाहता हूं कि सप्लाय डिपार्टमेंट कीतरफ से या दीगर किसी तरीके से चीप ग्रेन शाप्स अिन लोगों के लिये खोले जायें ताकी कम किमत में अिन लोगों को अनाज मिल सके जिस तरह हम अपने कुनबे के बारे में सोचते है हमारे भाअी, बहन या बच्चे भूखे हों तो अुनका करना हम जरूरी समझते है अुसी तरह से अिन १८०० लोगों के बारे में सोंचा जाय और यही तरीका अिन्तजाम किसी भी कल्याणकारी स्टेट के लिये ठीक हो सकता है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब को तो अुन जागीरदारों की हमेशा फिक्र होती है कि अगर अुनका काम्पेन्सेशन (Compensation) बंद किया जाय तो वे भूखे रहेंगें, रास्ते पर अिधर अुधर अुधर घूमना शुरू करेंगे। वे तो सिर्फ १२००ही लोग है। यहां तो १८०० लोगों का सवाल है। जागीरदार तो अैसे लोग है जिनके पास करोडों रुपया है, जमीन और जायदाद है ,शेअर्स है, कअी पुश्तों से पैसा जमा हुआ ह, अुनके बारे में हुकूमत को अितनी फिक्र है तो क्या जिन लोगों के पास घर नही है, पैसा जमा नही है, अुन को तनख्वाह भी अितनी नही मिलती कि वे पीछे कुछ रख सकें अुनके बारे में क्या हुकूमत को कुछ नहीं सोचना चाहिये? अैसे लोगों की तो हुकूमत पर ज्यादा जिम्मेदारी आकर पडती है। मै हुकूमत से अपील (Appeal) करूंगा और मै हाअुस के सामने अिस चीज को रखना चाहता हूं की यह अेक कान्क्रीट (Concrete) मसला आज हमारे सामने आया है। फायनान्स मिनिस्टर साहब के बजट के स्टेटमेंट में और राजप्रमुख के अेड्रेस में बडे जोर से कहा गया है कि बेरोजगारी का सवाल कम हो रहा है लेकिन सिर्फ अैसा कहने से यह सवाल हल होनेवाला नहीं है। अिन १८०० लोगों का सवाल आप किस तरह से हल करते है अुसको देखकर हम यह तय कर सकेंगे कि अिस बेरोजगारी के आम सवाल को आप किस तरह से हल करनेवाले है, लेकिन हुकूमत की जो सनअतों के बारे में आज पालिसी है अुसको देखकर हमें डर लगता है की बेरोजगारी और बढनेवाली है। अिस स्टेट में दिन ब दिन कारखाने किस तरह से बंद होते जानेवाले है अिसके बारे में मै आज नहीं कहना चाहता, बजट के वक्त मै अुस पर कहूंगा, लेकिन अगर अगले तीन चार दिनों में आप अिस मसले को हल कर सकेंगे तो मुमकिन है कि हमारे आज के ख्यालात कल बदल सकेंगे और हम भीं सोचने लगेंगे कि सचमुच आज की हुकूमत अिस सवाल को हल करना चाहती है और हुकूमत ने अेक कान्क्रीट (Concrete) स्टेप (Step) अिस बेरोजगारी के सवाल को हल करने में लिया है।

श्री. वि. के. कोरटकर:—मिस्टर स्पीकर सर, जिस मद में यह मांग की गअी थी अुसका कोअी ताल्लूक जनरल अिंडस्ट्रीज (General Industries) या हैदराबाद स्पीनिंग या वीविंग मिल से नही था। मांग यह की गअी थी कि अेक रक्कम जो शेअर्स (Shares) के तौर पर अेफ. आय. सी. को दी गअी थी और अब तक जिसका अेडवान्स (Advance) के तौर पर खर्च पडा है अुसके बारे में अकौंटंट जनरल ने अेतराज किया है कि अुसको अुस में न रखकर कॅपीटल अकौंट (Capital Account) में रखा जाय। अिसलिये अेक हेड (Head) से निकाल कर दूसरे हेड में डालने का यह सवाल है।

अिसमें हैदराबाद स्पीनिंग और वीविंग मिल का कोअी सवाल नहीं था। बहरहाल सवाल पैद

किया गया तो अुसके बारे में जो कुछ गलतफहमियां हुअी हैं अुनको दूर करना मेरे लिये जरूरी है। बात यह है कि वेलफेअर स्टेट (Welfare State) हो या गैरवेलफेअर स्टेट हो य कोअी और हो, अेक आदमी पैदा हुआ तो अेक न अेक दिन वह जरूर मरनेवाला है यह तो मानी हुअी चीज हैं।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—लेकिन वह नये लोग भी पैदा करता है।

श्री. वि. के. कोरटकर:—आदमी मरने की हालत में आ गया और अुस वक्त डॉक्टर को बुलाकर बहुत से अिजेक्शन्स देने के बाद भी वह नही बचा तो वह डॉक्टर नहीं है यह तो नही कह सकते। अुस डॉक्टरने दुनिया में कितनों को बचाया है अिसको भी देखना पडता है।

यह चीज तो मैंने अपने फायनान्स मिनिस्टरकी हैसियतसे बजट स्पीच में और दूसरे भी बहुत से मोकों पर बतलाअी है कि अिस वक्त जब कि हालत बहुत खराब है तो भी हमारी अिंडस्ट्रीज में प्रोडक्शन ज्यादा हो रहा है। मैंने आंकडे भी बतलाये थे और अिन टेक्सटाअिल अिंडस्ट्रीज के हद तक भी में समझता हूं कि अपोजीशन के लीडर और दीगर लोग अुतने ही अखबारात पढते होंगे जितने की और लोग पढते है। अुन्होंने देखा होगा कि अिस वक्त अैसा स्लम्प (Slump) आया था जिसमें अहमदाबाद, अिंदोर और कानपूर की बहुत सी टेक्सटाअिल मिल्स बंद हुअी। जो मीलें अच्छी तरह से चलती थीं अुनको भी बंद होना पडा। और यहां तो अेक ही मिल बंद हुअी है जिसके बारे में अेक्सपर्टस् की राय कायम हो चुकी है कि यह मिल अब नहीं चल सकती।

अभी यह कहा गया कि गवर्नमेंट के पास अेक अच्छा कानून है कि अुसके तहत अगर कोअी मसमेनेजमेंट हो रहा है तो अुस मिल के अिन्तजाम को अपने हाथ में लेकर हुकुमत चाहे तो चला सकती है। कहांतक यह कदम सही होगा अिसमे शक है अभी अेक मिल के बारे में गवर्नमेंट ऑफ अिंडिया ने अैसा किया तो बदकिस्मती से सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) से अुसके खिलाफ फैसला दे दिया। सोलापूर मिल का वाकया आपके सामने है। लेकिन अिसका मतलब यह नहीं है कि अिंडस्ट्रीज डिपार्टमेंट ने या लेबर डिपार्टमेंट ने अिसकी तरफ ख्याल नहीं किया।

जिस चीज को आप बतला रहे हैं अुसे करने की कोशिश हमनें भी की। गव्हर्नमेंट ऑफ अिंडिया के पास यह सवाल पेश किया गया। अुनके सामने हमारे हालात और अिस मिल के हालात रखे गये अुनसे यह भी कहा गया कि यह मिल यदि आप खुद अपने हाथ मे लेकर चलायें तो अच्छा होगा गव्हर्नमेंट ऑफ अिंडिया ने अपने अेक्सपर्ट को भेज कर अिस मिल का अिन्स्पेक्शन (Inspection) भी कराया। अुनकी रिपोर्ट भी हमारे पास आगअी है। अुन्होंने कहा है कि यह मिल बहुत पुरानी होगअी है। हमारे यहां भी यह मिल पुरानी मिल के नामसे ही पहचानी जाती है। पुरानी मिल अब नये मिल की तरह कैसे चल सकती है? अिस मिल का वीविंग सेक्शन (Weaving Section) बहुत खराब होगया है।

यह समझना चाहिये कि अेक मिल जो पुरानी होगअी वह नअी मिल की तरह काम नहीं दे सकती हैं। पुरानी मिल भी नअी मिल की तरह चलाअी जाय अैसा ख्याल करना ही गलत है। दुनिया म नअी नअी मिलें निकलती हैं चलती हैं बढती, पुरानी मिलें बंद होकर हैं अुनकी जगह नअी मिलें लेती हैं। यह पुरानी मिल को देखकर यह कहा जाता है कि अिसमें यह नहीं हो रहा है, वह नहीं किया जा रहा है। अैसा कहना कहांतक ठीक है?.

जो काम सरकार की तरफ से अच्छी तरह किया जा रहा है अुसके बारे में तो कुछ नहीं कहा जाता है। हमारें यहा की जो सिमेंट फॅक्टरी है अुसको अच्छी तरह फायदेमें चलाने के लिये हमारी सरकार कितनी कोशिश कर रही है। हैदराबाद स्टेट को वेलफेअर स्टेट (Welfare State) बनाने के लिये यहा की सरकार कितनी कोशिश कर रही है। कोअी सरकार वेलफेअर स्टेट बनाने की कोशिश न करें अैसा नही हो सकता है।

हमारे सामने सवाल यह है कि जो लेबरर्स बेकार रहेंगे अुनको कुछ न कुछ काम तो जरूर देना चाहिये। अुनको काम देने की जरूरत है यह बात तो गव्हर्नमेंट मंजूर करती है। लेकिन अुनको विविंग का ही काम दिया जाय यह बात गव्हर्नमेंट नहीं मान सकती है। अिसके सिलसिले में जो डेप्युटेशन आया था अुसका यह कहना था कि अिन लोगोंको वही काम दिया जाय जो आज तक वे कर रहे हैं। लेकिन गव्हर्नमेंट को यह मुमकिन नही है। दूसरी जगहो पर काम देने के बारे में गव्हर्नमेंट सोच रही है। जैसे की तुंगभद्रा प्रॉजेक्ट में काम हो रहा है, वहां पर अिन लोगों को काम दिया जा सकता है यह भी कहा गया कि आज तक जो लोग विविंग का काम कर रहे थे वे आज अेकदम जमीन खुदाअी का काम कैसे कर सकते ह ? यह बात तो गव्हर्नमेंट भी मानती है। लेकिन गव्हर्नमेंट पर यही प्रेस (Press) किया जाय की जो काम पहले अुन लोगों से लिया जाता था वैसा ही काम अुन्हे दिया जाना चाहिये, हम विविंग ही करेंगे, जिस जगह पर हम पहलें खडे होते थे वही काम हमें मिलना चाहिये, तो यह नही हो सकता है। दूसरी जगह अेंप्लॉयमेंट देने का प्रपोझल गव्हर्नमेंट ने अुनके सामने रखा है। हम समझते हैं कि यह सवाल तभी हल होगा जब कि लोग दूसरे काम करने के लिये भी तैयार होंगे।

मुझपर आक्षप किया गया कि मैंने अपनी फायनान्सकी स्पीचमें कहा था कि बेकारी दूर होरही है जबकि अेक तरफ मिलें बंद हो रही हैं अुसके कारण १८०० मजदूर बेकार हो रहे है।

अभी हमारे यहां अन अेंप्लॉयमेंट खतम हो रहा है अैसा तो मैंने कभी नहीं कहा। अन अेंप्लॉयमेंट तो बढ रहा है। लेकिन अुसको रोकने की हम काफी कोशिश कर रहे है। और हम भी चाहते हैं कि अिसको रोका जाना चाहिये। मैंने बतलाया था कि अन अेंप्लॉयमेंट रजिस्टर्स में जितने लोग दर्ज किये गये थे अुनमें से काफी तादाद में रिप्लेसमेंट (Replacement) किया गया है आॅल्टरनेटिव्ह अेंप्लॉयमेंट (Alternative employment) देने के लिये अिंतजाम किया जा सकता है। यह मैंने पहले ही कहा है। और हुकूमत अिस बात की कोशिश कर रही है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को अेंप्लायमेंट दिया जा सके।

अेक मेंबर नें यह चीज रखी की गव्हर्नमेंट के पास अेक अरबन अनअेंप्लॉयमेंट फंड (Urban unemployment fund) है। मुझे तो अिसकें बारें में मालूमात नहीं कि आया अैसा कोअी फंड है या नहीं। लेकिन अगर अैसा फंड है तो अुसके बारें में मैं जरूर कोशिश करूंगा और अिससे यदि मदद हो सकती है तो जरूर दूंगा।

आखिर में मैं अितनाही कहना चाहता हूं कि यहां जो सप्लिमेंट्री डिमांड (Supplementary Demand) पेश की गअी है अुससे अिस बहस का संबंध नही है, अिस लिये अिस मांग के बारें में कोअी खास अुजर नहीं होना चाहिये।

Shri V. D. Deshpande: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker: The question is:

"That a further sum not exceeding Rs. 4,93,000 under Demand No. 5 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The Motion was adopted.

Mr. Speaker: The question is:

"That a further sum not exceeding Rs. 4,29,000 under Demand No. 9 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The Motion was adopted.

Mr. Speaker: The question is:

"That a further sum not exceeding Rs. 1,00,00,000 under Demand No. 14 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The Motion was adopted.

Demand No. 8 Territorial and Political Pensions Rs. 12,71,000

The Chief Minister (Shri B. Ramakrishna Rao): I beg to move:

"That a further sum not exceeding Rs. 12,71,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker: Motion moved:

Demand No. 3 — 25 G.A.D.—2,03,400

Shri B. Ramakrishna Rao : I beg to move :

"That a further sum not exceeding Rs. 2,03,400 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

Mr. Speaker : Motion moved :

Delay in abolishing cash grants

Shri A. Lakshmi Narasimha Reddy (Wardannapet) : I beg to move :

"That the grant under Demand No. 8 be reduced by Re. 1."

Mr. Speaker : Motion moved.

* شری ایل - این ریڈی - اسپیکر سر - کیاش گرانٹس (Cash grants) کے سلسلہ میں میں ہاؤز کی توجہ مبذول کرانا چاہتا ہوں - اسلئے کہ ایک عرصہ سے ہاؤز کا اصرار رہا ہے اور خاص طور پر اپوزیشن کی جانب سے کہ کیاش گرانٹس کو ابالش (Abolish) کرنے میں عجلت کی جائے - حکومت کی جانب سے بھی بار بار یہ امید دلائی گئی ہے کہ کیاش گرانٹس ابالش کئے جائینگے - لیکن اسکے باوجود کیاش گرانٹس ابتک ابالش نہیں ہوئے ہیں جسکی وجہ سے ہمارے فینانس پر کافی بار پڑرہا ہے - اس سال بھی ہم دیکھتے ہیں کہ اس کا پراویژن بجٹ میں ہے - ہم تو یہ سمجھ رہے تھے کہ گذشتہ سال ہی اسکو ابالش کیا جائیگا مگر ایسا نہیں ہوا اور اس سال کے بجٹ میں بھی اسکو پروائیڈ (Provide) کیا گیا ہے - میں حکومت کو توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ جب آپ رسوم داروں کے رسوم ابالش کئے ہیں اور ایک آرڈر کے ذریعہ اسے بھی بند کرسکتے ہیں تو کیاش گرانٹس کو بند کرنے میں تاخیر کی کوئی وجہ نہ ہونی چاہئے - مجھے یہی چیز ہاؤز کی توجہ میں لانا تھا -

شری بی - رام کشن راؤ - مسٹر اسپیکر سر - ٹریٹوریل اینڈ پولیٹیکل پنشنس (Territorial & Political Pensions) کی مد کے تحت ۱۲ لاکھ ۷۱ ہزار کا گرانٹ ہے اسکی نسبت آنریبل ممبر نے یہ کٹ موشن پیش فرمایا ہے - اس سلسلہ میں انہوں نے جو کچھ فرمایا وہ یہی کہ کئی مرتبہ حکومت نے ان کیاش گرانٹس کو ابالش (Abolish) کرنیکا وعدہ کیا لیکن ابتک اس وعدہ کو پورا نہیں کیا - اس وجہ سے آنریبل ممبر نے کٹ موشن پیش کیا ہے - غالباً آنریبل ممبر کا مقصد یہ ہے کہ ان

مسئلہ پر حکومت نے ابتک کیا کیا اور کیا کرنا چاہتی ہے اسکو صراحتاً ظاہر کیا جائے۔ میں ہاؤز کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ گزشتہ سال یہ سمجھا گیا تھا کہ کیاش گرانٹ ابالشن ایکٹ کے پاس ہو جانے کے بعد محض اسکو شیڈول میں درج کرکے منصبوں اور ان تمام چیزوں کو مسدود کیا جاسکتا ہے ۔ اس وقت جو کچھ ہماری معلومات منصبوں وغیرہ کے بارے میں تھیں ان پر ہماری یہ رائے مبنی تھی ۔ اس سلسلہ میں سب سے پہلے جو وار پڑا وہ دیشمکھوں اور دیشپانڈوں کے رسوم پر پڑا ۔ اور اسکے بارے میں چونکہ حکومت کے کچھ کلیرنوشنس (Clear Notions) تھے ۔ وہ رسوم ریوینیو میں کچھ ڈیوٹیزانجام دینے کے سلسلہ میں تھے اور اب وہ بالکل ہی سینیکیور گرانٹس (Sinecure grants) ہوگئے تھے ۔ انکو تو بہت آسانی سے مسدود کیا جاسکتا ہے ۔ چنانچہ شیڈول میں انکو درج کردیا گیا اور بعض گرانٹس کے بارے میں کیونکہ حکومت کو بھی تفصیل کے ساتھ اسکا علم نہ تھا کہ ہر گرانٹ کے بارے میں کیا کرنا چاہئے اس وجہ سے یہ چھوڑ دئے گئے ہیں تاکہ شیڈول میں کس قسم کے کیاش گرانٹس کو درج کرکے اس ایکٹ کو امپلیمنٹ (Implement) کیا جائے ۔ لیکن بعد میں امپلیمنٹیشن کے وقت شیڈول میں درج کرنے کے سلسلہ میں غالباً آنریبل ممبر کو علم نہیں ہے چنانچہ انہوں نے کٹ موشن پیش کیا ہے ۔

واقعہ یہ ہے کہ ہم نے رسوم کو بند کردیا ہے ۔ اسکے بارے میں ہائیکورٹ میں رٹ (Writ) پیش ہوا ہے اور کیاش گرانٹ ابالیشن کے سلسلہ میں مقدمہ چل رہا ہے ۔ دوسری چیز یہ ہے کہ حکومت کو یہ بھی جاننے کی ضرورت تھی کہ جو گرانٹس منصبوں اور یومیوں وغیرہ کے روپ میں ہیں وہ کس نوعیت کے ہیں ۔ انکے گرانٹس کن شرائط کے تحت ہیں ۔ آیا انکو بلا معاوضہ یا معاوضہ کے ساتھ ختم کیا جاسکتا ہے ۔ چنانچہ اسکی جانچ کرنے کے لئے حکومت نے ایک کمیٹی مقرر کی ہے تاکہ وہ ایسے منصبوں اور یومیوں کی ہسٹری کی اسٹڈی (Study) کرکے منصبداروں کی کمیٹی اور انکی اسوسیشن کے ریپریزنٹیٹیوز (Representatives) سے گفتگو کرکے کچھ مواد بھی جمع کیا ہے اور اسکی اسٹڈی کرنے کے بعد اب حکومت ایک نتیجہ پر پہنچ چکی ہے ۔ حکومت اوسے کس شکل میں نافذ کرنا چاہتی ہے ۔ میں آج بیان کرنے سے قاصر ہوں ۔ میں انکو ہفتہ عشرہ میں بیان کرونگا جبکہ حکومت عنقریب کیاش گرانٹس ابالشن امنڈمنٹ بل پیش کریگی ۔ اس وقت میں یہ تفصیلات عرض کرنا نہیں چاہتا ۔ فی الحال اس کٹ موشن کے سلسلہ میں آج اتنا ہی عرض کرنا چاہتا ہوں کہ یہ پورا مسئلہ ہمارے زیر غور رہا اور اس میں عجلت نہیں ہوئی جیسی کہ عجلت آنریبل ممبرس چاہتے ہیں ۔ اسکی وجہ صرف یہ ہے کہ اس قسم کے معاملات میں حکومت کی یہ پالیسی ہے کہ وہ پورے طریقہ پر اسکے نتیجوں پر ، اسکے بیاک گرونڈ ، پس منظر اور آنے والے نتائج پر غور کرنے کے بعد اقدام کرے ۔ اس میں حکومت کی پالیسی عجلت کی نہیں ہے ۔ آج ہم ہر چیز کو ختم کر رہے ہیں ۔ جاگیرات ابالیشن

کرر ہے ہیں ۔ مناصب ابالش کر رہے ہیں ۔ کیاش گرانٹس ابالش کر رہے ہیں تو اسکی نسبت ہر قسم کے معلومات ہمیں ہونا چاہئے ۔ جو وسٹڈ رائٹس (Vested rights) ہیں انکو ابالش کرنے کا اقدام کر رہے ہیں تو اس قسم کا اقدام کرتے وقت جو حکومت کی پالیسی ہونی چاہئے وہ عجلت کی نہ ہونی چاہئے ۔ وہ ایسی ہونی چاہئے کہ اس میں ناجائز طور پر دیر نہو اور ساتھ ساتھ اس مسئلہ کے ہر پہلو پر بھی غور کرلیا جائے ۔ حکومت یہ بھی غور کر رہی ہے کہ ابالیشن کی زد میں آنے والے لوگوں پر کیا اثر پڑنے والا ہے ۔ ان ہی امور کو پیش نظر رکھتے ہوئے حکومت کام کر رہی ہے ۔ ایک طرف تو اوس سارے ایکٹ کو جو منظور کیا گیا کورٹ میں چیلنج کیا گیا ہے اس کا تصفیہ ہونا ہے ۔ دوسری طرف مناصب کو بند کردینے کے کیا معاشی نتائج ہونگے اون پر بھی غور کرنا ہوگا ۔ کیونکہ اسکی وجہ سے (۸) ہزار اشخاص جن میں بوڑھے ، بچے اور بیوائیں ہیں متاثر ہوجائینگے ۔ میں یہ بھی کہدینا چاہتا ہوں (گو اسکی ضرورت نہیں ہے) کہ ان آٹھ ہزار اشخاص میں سے اکثریت ایسے لوگوں کی ہے جن کا تعلق میناریٹی کمیونیٹی سے ہے اور جنہیں یہ شکایت رہی کہ اونکی معاشی حالت کو ایک دم دھکا پہنچایا گیا ۔ اس سے قبل آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے ان اسپلائمنٹ کی طرف توجہ دلاتے ہوئے فرمایا تھا کہ ایک کلیان کاری اسٹیٹ کو کیا کرنا چاہئے ۔ میں یہ کہونگا کہ یہ مسئلہ اس سے بہت گہرا تعلق رکھنے والا ہے ۔ اسی وجہ سے حکومت اس کے متعلق آہستہ آہستہ اقدام کر رہی ہے لیکن وہ ایک صحیح قدم اٹھا رہی ہے ۔ وہ ابالشن آف کیاش گرانٹس کے راستہ پر ہی جانا چاہتی ہے ۔ لیکن قبل اس کے کہ ایسا اقدام کیا جائے اس امر کی جانچ کرلینا ضروری ہے کہ آیا اس سے کوئی مضر نتائج تو پیدا نہ ہونگے تا کہ بعد میں پچھتانا نہ پڑے ۔ یہاں پر میں ایک فارسی شعر سنانا چاہتا ہوں ۔ اورنگ زیب بڑے سخت آدمی تھے ۔ اون کے متعلق تاریخ میں بھی لکھا ہوا ہے کہ اونکی طبیعت بڑی سخت تھی ۔ انہوں نے جو مختلف خطوط لکھے ہیں اون کے مجموعہ کا نام " رقعات عالمگیری " ہے ۔ وہ خطوط فارسی میں ہیں ۔ اوس میں انہوں نے ایک خط اپنے ایک لڑکے کو لکھا ہے جس کے متعلق وہ سمجھتے تھے کہ وہ اون کا جانشین ہو کر امپرر (Emperor) ہوگا ۔ اوس کو خط لکھتے ہوئے وہ اسکو نصیحت کرتے ہیں :-

آهسته خرام بلکه مخرام
زیر قدمت هزار جان است

یعنی آہستہ چلو بلکہ مت چلو تو بہتر ہے کیونکہ تمہارے قدموں کے نیچے ہزاروں جانیں ہیں ۔ یہ کیاش گرانٹس کا معاملہ بھی ہزاروں زندگیوں سے تعلق رکھتا ہے ۔ مناصب جاگیروں وغیرہ کے سلسلہ میں میرے دوست آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا تھا کہ یہ آپکی مہربانی سے بچے ہوئے ہیں ۔ میں لیڈر آف دی اپوزیشن سے درخواست کرونگا کہ وہ اولڈ ملز کے ان اسپلائمنٹ کا مسئلہ حل کریں اور میں یہ مسئلہ حل کرتا ہوں ۔ اسطرح تقسیم کار ہو جائیگی ۔ (Laughter)

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—हम दोनों मिलकर हल करेंगे ।

شری بی - رام کشن راؤ - دونوں مل کر حل کریں تو . . . . خیر میں اوسکی صراحت کرنا نہیں چاھتا - لیکن اتنا یقین دلانا چاھتا ھوں کہ منصبوں کے ابالیشن کے بارے میں عنقریب ایک امنڈمنٹ آنے والا ھے - ھم اوس کے متعلق سوچ سمجھ کر اس نتیجہ پر پہنچ چکے ھیں - ھفتہ عشرہ میں اسکی صراحت ھو جائیگی - گزشتہ سال ھم نے بجٹ میں اس کے لئے کم گنجائش رکھی تھی - یہ سوچ کر کم گنجائش رکھی تھی کہ آئندہ سال یہ بند ھو جائینگے لیکن ایسا نہ ھوسکا - اس لئے اس سال بھی (۱۲) لاکھ (۷۱) ھزار کا سپلیمنٹری ڈیمانڈ کرنا پڑرھا ھے اور مجھے امید ھے کہ ھاؤز اس کو منظور کرلیگا کیونکہ عنقریب اس سلسلہ میں حکومت کی جانب سے نئے پرنسپلس (Principles) پیش ھونے والے ھیں -

Delay in Abolishing Cash Grants

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 8 be reduced by Re. 1."

The Motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

"That a further sum not exceeding Rs. 12,71,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The Motion was adopted.

Demand No. 3— General Administration— Rs. 2,03,400-*Working of G. A. D.*

Shri G. Sreeramulu (Manthani) : I beg to move :

That the grant under Demand No. 3 be reduced by Rs. 100.

Mr. Speaker : Motion moved.

Problem of Hyderabad House in London

Shri Katta Ram Reddy (Nalgonda—General) : I beg to move :

"That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1."

Mr. Speaker : Motion moved.

Working of Public Service Commission

Shri V. D. Deshpande : I beg to move :

"That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1".

Mr. Speaker : Motion moved.

Working of Land Census Scheme

Shri Ch. Venkatrama Rao (Karimnagar) : I beg to move:

"That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1".

Mr. Speaker : Motion moved.

Some Aspects of Land Commission and Land Improvement Board.

Shri B. D. Deshmukh (Bhokardhan—General) : I beg to move :

"That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1.'

Mr. Speaker : Motion moved.

* شری جی - سری راملو — مسٹر اسپیکر سر - جنرل اڈمنسٹریشن کے سلسلہ میں (٥) لاکھ (٦١) هزار کا جو سپلیمنٹری ڈیمانڈ (Supplementary demand) ھے اس کے بارے میں میں اپنے وچار (विचार) رکھنا چاھتا هوں .. جی - اے - ڈی - (G.A.D.) ایسا ڈپارٹمنٹ ھے جو قریب قریب تمام محکموں کے انتظامات پر حاوی رهتا ھے - اور اون کی افیشنسی (Efficiency) اور کارکردگی کا ذمه دار رهتا ھے - جن مدات کے سلسله میں یه ڈیمانڈ کیا جارها ھے اوس کی وضاحت کرتے هوئے یه کہا گیا ھے که ریوینیو بورڈ کے انتظامات - مکانات کے کرائے - اسٹیٹ بنک کے اخراجات - بونس کے اخراجات ضلع کے خزائن اور آئی - اے - یس کے امیدواروں کی ٹریننگ کے اخراجات اور معلومات عامه کے سررشتوں وغیرہ کے اخراجات کی تکمیل کے لئے یه ڈیمانڈ کیا جارها ھے - گزشته سال جو بجٹ هاؤز کے سامنے پیش کیا گیا اور پھر اب اوس سے هٹ کر مزید اخراجات کرایه مکانات یا دیگر اسٹیبلشمنٹ چارجس (Establishment charges) کے لئے جو روپیے مانگے جارھے هیں وہ کیوں مانگے جارھے هیں - میں نہیں سمجھ سکا که اوسی وقت هی بجٹ کو پیش کرتے وقت کیوں ان تمام باتوں کا جائزہ نہیں لیا گیا - میں نہیں سمجھتا که وہ ایسے ناگہانی اخراجات تھے جو عین وقت پر نکل پڑے که اون کےلئے سپلیمنٹری ڈیمانڈ کی ضرورت هوئی هو - یه صرف اکسٹراویگنٹ اکسپنڈیچرس (Extravagant expenditures) هیں جو کرائے اور

دیگر انتظامی امور وغیرہ کے لئے کئے جارہے ھیں - اگر بروقت ڈپارٹمنٹ کی کارگزاریوں وغیرہ کی دیکھ بھال ھو جاتی تو میں سمجھتا ھوں کہ اس طرح کے غیر ضروری اخراجات کی نوبت نہ آتی - کرایہ کے سلسلہ میں پانچ چھ آئٹمس بتلائے گئے ھیں - میں سمجھ نہ سکا کہ پہلے یہ دفاتر کہاں تھے- اب پھر کس وجہ سے ان دفاتر کو نئے مکانات مہیا کرنے پڑے- یہ چیز کہیں بھی واضح نہیں ھے - حکومت کی طرف سے ایک پریس نوٹ سنہ ۱۹۵۳-۵۴ء کی سالانہ رپورٹ کی شکل میں ھمارے سامنے آیا - اس میں جنرل اڈمنسٹریشن ڈپارٹمنٹ کی چند کارگزاریوں کی صراحت کی گئی ھے - اس میں یہ کہا گیا ھے کہ عوام کے نقطہ نظر اور اونکی رائے کو سامنے رکھتے ھوئے (۱۳) آدمیوں کی منسٹری کو (۱۰) تک کم کردیا گیا ھے - یہ فیگرس (Figures) اس میں لکھے ھوئے ھیں - میں ان الفاظ کو پھر اسمبلی کے سامنے رکھتے ھوئے یہ پوچھنا چاھتا ھوں کہ منسٹروں کو (۱۰) تک کم کر کے پھر (۸) ڈپٹی منسٹرس کو بڑھانا کس طرح عوام کے جذبات سے تعلق رکھتا ھے - پریس نوٹ میں عوام کے جس جذبے کا ذکر کیا گیا اور جس کے پیش نظر کمی کی گئی تھی اب ان کے اضافے سے اوس پر پانی پھر گیا - اس طرح خزانہ پر مزید بار ڈالنا کہاں تک درست ھے - میں آنریبل منسٹر سے جن کے تفویض یہ پورٹ فولیو (Portfolio) ھے دریافت کرنا چاھتا ھوں کہ کیا یہ پبلک ٹریژری پر بار نہیں ھے - چیف منسٹر صاحب نے ڈپٹی منسٹرس کے تقرر کے وقت یہ کہا تھا کہ اس سے عوام سے ربط قائم رکھا جائے گا - میں نہیں سمجھ سکا کہ اس سے پہلے جو وزارت تھی وہ عوام سے کیوں ربط قائم نہیں رکھ سکتی کہ اب ڈپٹی منسٹروں کے بڑھانے سے عوام سے ربط قائم ھو جائیگا - اس کو میں مان نہیں سکتا - جیسی اوس وقت حالت تھی اب بھی ویسی ھی رھیگی - ڈپٹی منسٹرس کی تعداد بڑھا کر بلاوجہ خزانہ پر بار ڈالا گیا ھے - آج ان اسپلائمنٹ (Unemployment) بڑھ رھا ھے - اگریکلچرل اکانمی (Agricultural economy) گرتی جارھی ھے - مواضعات میں پنچایتیں برابر کام نہیں کررھی ھیں - مدارس کے لئے مکانات نہیں ھیں- ان ضروری مسائل کی طرف توجہ نہ دیتے ھوئے صرف اپنے ھی گھر کو سنبھالنے کے لئے ھی اتنے اخراجات ھورھے ھیں- میں کہونگا کہ یہ غیر موزوں اخراجات ھیں -

انسپکٹر آف آفسس کا دفتر کھولنے کے متعلق بھی ذکر کیا گیا ھے - اس کے بارے میں میں چند الفاظ بیان کرنا چاھتا ھوں - انسپکٹر آف آفسس کے دفتر کا جو قیام عمل میں آیا ھے وہ آفسس کی افیشنسی بڑھانے - عہدہ داروں اور ملازمین کو ٹھیک طور سے کام پر لگانے اون کی ضروریات پوری کرنے کے معاملہ میں کسی طرح ممد و معاون ثابت نہ ھوسکا - مجھے اس کا تجربہ ھے کہ دفاتر میں ملازمین وقت پر نہیں آتے - تمام دفاتر خالی پڑے رھتے ھیں - اور آتے بھی ھیں تو تین تین چار چار مرتبہ چائے کافی وغیرہ پینے میں وقت ضائع کرتے ھیں- پبلک کا کام اس طرح ھوتا ھے کہ ایک ایک درخواست مہینوں تک ٹیبل پر ھی پڑی رھتی ھے - جمعہ کے دن ملازمین کے ایک خاص [illegible]

کے لئے نماز کے واسطے ڈیڑھ گھنٹہ دیا جاتا ہے ۔ سیکولر اسٹیٹ میں جب آپ کسی خاص فرقے کو اس طرح کا ٹائم دیتے ہیں تو دوسرے فرقوں کے لئے بھجن اور پوجا پاٹ کے لئے بھی وقت دینے کا سوال پیدا ہو جاتا ہے ۔ آپ ملازمین میں امتیاز کر رہے ہیں۔ عموماً لوگ گیارہ گیارہ بجے آتے ہیں ۔ ایک گھنٹہ بھی کام کرنے نہیں پاتے کہ نماز کا وقت ہو جاتا ہے ۔ نماز سے دو بجے واپس آتے ہیں پھر ایک آدھ گھنٹہ کام کرتے ہیں اور چار ساڑھے چار بجے واپس چلے جاتے ہیں ۔ آپ نے روزانہ ان لوگوں کا سیکلوں کا پروسیشن چار بجے کے وقت اسمبلی کے سامنے سے گزرتے ہوئے دیکھا ہوگا ۔ میں یہ کہدینا چاہتا ہوں کہ کہیں بھی کام برابر نہیں ہوتا ۔ یہ لوگ بیس فیصد کام بھی روزانہ نہیں کرتے ۔ میں یہ دعوی کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ مواضعات کے دفاتر میں تو لوگ ٹیبلوں پر پاؤں ڈال کر سوتے رہتے ہیں ۔ اس کے متعلق تحصیلدار صاحب اور دیگر عہدہ داروں کو جب لکھتے ہیں تو کوئی توجہ نہیں دیجاتی ۔ وہ لوگ پاؤں پسار کے سوتے رہتے ہیں ۔ چائے آتی رہتی ہے پیتے رہتے ہیں ۔ کچھ چائے فائلوں پر گر جاتی ہے ۔ اوس کو چیونٹیاں یا دیمک لگی جاتی ہے اور فائل غائب ہوجاتی ہے ۔ حال ہی میں آنریبل منسٹر فار اگریکلچر نے کسی سلسلہ میں کہا کہ فائل نہیں مل رہی ہے ۔ ہماری میونسپالٹی کا ذکر کرتا ہوں کہ وہاں فائل دیکھنے کی ضرورت تھی جب تحصیلدار صاحب سے کہا گیا تو انہوں نے جواب دیا کہ فائل نہیں مل رہی ہے ۔ ضلع کے دفاتر کی یہی حالت ہے ۔ انسپکٹر آف آفس کو اسکے متعلق اچھی طرح کام پر لگانا چاہئے اور اون کے کام میں وسعت پیدا کرنا چاہئے ۔ ورنہ جو سسٹم پہلے سے چلتا رہا وہی اب بھی چلتا رہیگا ۔ سرکاری ملازمین میں کام کرنے کا جو رجحان ہے اوسکی طرف میں جنرل اڈمنسٹریشن ڈپارٹمنٹ کی توجہ مبذول کروانا چاہتا ہوں ۔

چیف سکرٹریٹ کے آفس میں چیف سکرٹری کے طور پر جو صاحب کام کرتے ہیں وہ باہر کے آدمی ہیں ۔ میں نہیں سمجھ سکا کہ اس طرح باہر کے آدمی کو اب تک وہاں کیوں رکھا گیا ۔ اس میں کیوں تبدیلی نہیں ہوتی ۔ جسطرح جوڈیشیل ڈپارٹمنٹس کے ہیڈ باہر کے ہیں چیف سکرٹری بھی باہر کے ہیں ۔ اسی طریقہ سے بعض بڑے بڑے سررشتوں پر باہر کے ہیڈس آئے ہیں ۔ اس کا صاف مطلب یہ نکلتا ہے کہ حکومت ہمارے اڈمنسٹریشن کو ہیڈلس (Headless) بنانا چاہتی ہے ۔ میں یہ کہدینا چاہتا ہوں کہ یہاں پر بھی ویسی ہی قابلیت رکھنے والے لوگ مل سکتے ہیں جو کم تنخواہ پر اچھی طرح سے کام کرسکتے ہیں ۔ اسکے باوجود باہر کے آدمیوں کو برقرار رکھا گیا ہے ۔ اس اصول کو چیف منسٹر صاحب نے بھی اسمبلی میں کئی مرتبہ مان لیا ہے ۔ لیکن مجھے افسوس سے کہنا پڑرہا ہے کہ وہ اصول پایہ تکمیل کو نہیں پہنچ رہا ہے ۔ حال ہی میں کلکٹروں کی ایک کانفرنس بلائی گئی تھی اوس میں تمام ضلعوں کی انتظامی سہولتوں کے متعلق غور کیا گیا ۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ جو اڈمنسٹریٹیو

هیڈس ہوتے ہیں وہ ایسی باتوں کو اس کان سے سنتے ہیں اور اوس کان سے اڑا دیتے ہیں - کلکٹروں کے پاس برابر رپر یزنٹیشن ہوتا ہے لیکن اوس کا جواب نہیں ملتا - اس کے قبل جب ریپریزنٹیشن ہوتا تھا اور کسی قسم کی درخواست پیش کی جاتی تھی تو کم از کم اوسکی رسید دیجاتی تھی - رسید دینے کے لئے ہی پرنٹیڈ (Printed) رسید گورنمنٹ کی طرف سے مہیا کی گئی ہے لیکن آجکل وہ بھی نکالدیگئی ہے - کم از کم تعلقہ کے چھوٹے سوٹے لوگوں کی آواز حکومت تک نہیں پہنچتی ہے تو ایک لاکھ عوام کی طرف سے نمائندہ بنکر جو لوگ آئے ہیں اور یہاں بیٹھے ہوئے ہیں ایسے لوگوں کی درخواستوں کا جواب تو ملے کہ فلاں تاریخ کو درخواست پہنچی ہے - اگر یہ بھی نہ معلوم ہوسکے تو ہم اس ہاؤز سے کیا امید رکھ سکتے ہیں .. مجھے کبھی کبھی اس پر رونا بھی آتا ہے - میں نہیں کہہ سکتا کہ ان چھوٹی چھوٹی باتوں کی طرف کب دھیان دیا جائیگا - کم سے کم یہ انتظام جی - اے - ڈی کی طرف سے کیا جائے کہ درخواستوں کی رسید دیجائے تو درخواست دینے والے کو تسلی ہوگی کہ آج نہیں تو پانچ سال کے ختم تک اوسکی درخواست پر کوئی نہ کوئی کارروائی ہوگی - عوام کو آس ہو جائیگی - ایک سوال کے جواب میں آنریبل چیف منسٹر نے کہا کہ

"To reply to all the applications will be mere waste of paper."

اس طرح ویسٹ آف پیپر (Waste of paper) ہوگا یہ خیال ظاہر کیا گیا - عوام جب اپنی تکالیف کو دور کرنے کے لئے درخواست دیتے ہیں تو اسکے ریپلائی (Reply) کے لئے ایک پیپر ویسٹ (Paper waste) ہو جاتا ہے تو میری سمجھ میں نہیں آیا کہ یہ ویسٹیج (Wastage) اور لیکیج (Leakage) کونسے ڈپارٹمنٹ میں نہیں ہے - حقیقت میں جہاں ویسٹیج اور لیکیج ہے اسکا انسداد تو نہیں کیا جاتا - جہاں کرپشن (Corruption) ہے اسکا انسداد نہیں کیا جاتا لیکن عوام کی تسلی کے لئے ایک درخواست کی رسید دیدیجائے تو اوس سے ویسٹ آف پیپر ہوتا ہے - اگر بیس ہزار رسائد خرچ ہو جائینگے تو اس سے ایسا کونسا بھاری نقصان ہو جائیگا - اڈمنسٹریشن کی ایفیشنسی کو بڑھائیں تو لوگوں کو تسلی ہوتی ہے - درخواستوں کی رسید وصول ہو جائے تو عوام کو تسلی ہوتی ہے کہ ہماری درخواست پہنچ گئی ہے اسپر غور کیا جائیگا - اسطرح لوگوں کا بھروسہ اور اعتماد حاصل کیا جاسکتا ہے - اس قسم کی تسلی دینا ضروری ہے - میں ایک چھوٹی سی چیز مانگ رہا ہوں کوئی بڑا پراجکٹ نہیں مانگ رہا ہوں - کوئی ریوبلیوشنری چینج (Revolutionary change) نہیں چلا رہا ہوں - میری چھوٹی سی مانگ کو بھی حکومت پورا نہیں کررہی ہے - میں پھر مانگ کرونگا کہ حکومت کو اسپر توجہ کرنی چاہئے -

سرکاری ملازمین کا بے وقت تبادلہ بھی ایک بڑا مسئلہ بنکر ہوگیا ہے - کبھی تو تین سال سے زیادہ عرصہ تک ایک افسر کو رکھا جاتا ہے اور کبھی ایسا ہوتا ہے کہ

جلد جلد تبادلے کئے جاتے ھیں - اس میں شک نہیں کہ تبادلوں کے لئے اصول معین ہیں لیکن اگر - مگر - بشرطیکہ وغیرہ کی گنجائش ایسے لوپ ھولس (Loop-holes) پیدا کردیتی ہے کہ اسکا سہارا لیا جاتا ھے - کسی ملازم کا تبادلہ کل ھی ھوا ھے وہ آکر کام شروع کرتا ھے کہ دوسرے دن پھر اسکا تبادلہ کردیا جاتا ھے - تبادلے سوچ سمجھکر نہیں کئے جاتے ھیں - پہلے سے غور کرنا چاھئے کہ کس شخص کو کہاں رکھنا مناسب ہے - بجز اسکے کہ کسی ملازم کے خلاف سنگین الزام ھو بلا کسی وجہ کے کسی کا تبادلہ دس سال سے پہلے نہیں کرنا چاھئے - سنگین الزامات کی سزا آج کل یہ دیجارھی ہے کہ بس تبادلہ کردیا جاتا ھے - تبادلے سے یہ ھوتا ہے کہ ایک تعلقہ کا روگ دوسرے تعلقہ میں پھیل جائیگا - متبدلہ ملازم ہرجگہ اپنے چالوں کا بیج بوتا جائیگا - اس طرح متعدی مرض ھوجائیگا - اس لئے میں یہ کہونگا کہ اگر کسی ملازم سے غلطی ھوئی ہے تو اس کو کڑی سزا دیجانی چاھیئے - تبادلے سے اس کی غلطیوں کا انسداد نہیں ھوسکتا - تبادلہ کردینا مرض کا کوئی علاج نہیں ہے - حکومت کو چاھیئے کہ اس کے آوٹ لک (Out look) کو چینج کرے - جب کوئی ملازم ایک جگہ موزوں نہیں ھے تو وہ دوسری جگہ کیسے موزوں ھوسکتا ہے - اس طرح کا رجحان غلط ھے - ھرشخص یہ چاھتا ہے کہ وہ اپنی پسند کے مقام پر رھے - جہاں اپنے لئے سہولت سمجھتا ھے وھاں رھنا چاھتا ھے یا اپنے مقام سے قرب وجوار میں رھنا پسند کرتا ہے - تبادلوں کے لئے سکریٹریٹس - ریوینیو بورڈ وغیرہ ھر جگہ پیرویاں کی جاتی ھیں - ایسی پیروی کرنے والوں کو ختم کرنا چاھیئے - حکومت کو چاھیئے کہ وہ افیشینسی کے ساتھ کام کرے - اصول سے ھٹکر کام کیا جائے تو لوگوں کو پیروی کا موقع ملتا ھے - ھوتا یہ ھے کہ کسی ملازم کو ایک ھی جگہ پانچ دس سال گزر گئے ھیں - لیکن حکومت اس کو وھیں رکھنا چاھتی ہے - بعض ایسے کیسس ھیں کہ تین سال نہیں ھوئے ھیں لیکن تبادلہ کردیا جاتا ھے - اس طرح اکثر لوگوں کے نام اسمبلی میں آئے ھیں - ھستک صاحب وغیرہ کا نام اسمبلی میں لیا گیا ہے۔

پروموشنس (Promotions) کی حدتک بھی یہی ھوتا ھے کہ جس کو مناسب سمجھیں اس کو دیا جاتا ھے - رینک (Rank) وغیرہ کا لحاظ نہیں کیا جاتا - اگر حکومت کی ایسی پالیسی رھے تو حکومت ڈھیلی ھوجائیگی - اس طرح کی غیر مناسب مثالیں عوام کے سامنے قائم نہیں کرنا چاھیئے - حکومت کی نگرانی اچھی ھونی چاھیئے - میں نے جی - ایے - ڈی پر جو تبصرہ کیا ھے اس کو ملحوظ رکھکر حالات کو ٹھیک کرنے کی کوشش کرنی چاھیئے - مجھے امید ہے کہ اس تبصرے کے مدنظر حالات کو بہتربنانے کی کوشش کی جائیگی -

شری کشٹہ رام ریڈی - مسٹر اسپیکر سر - میں نے ایک چھوٹا سا کٹ موشن پیش کیا ھے - اس سلسلہ میں میں دو بجٹ سشنوں کے دوران میں یہ عرض کرتا آیا ھوں کہ مانارکی (Monarchy) یا شخصی حکومت کے بعد جب عوامی حکومت آئی ھے تو گورنمنٹ کو چاھئے کہ افیشنسی کو مینٹین (Maintain)

کرے ۔ اور اس کو اڈجسٹ کرنے میں حکومت کا کوئی ایک نظریہ ہونا چاہئے ۔ میں کہونگا کہ وہ نظریہ حکومت کے ذہن میں ابتک پیدا نہیں ہوا ہے ۔ وہی نظام شاہی دربار ہے ۔ اوس کا وہی بجٹ ہے ۔ بجٹ کے وہی مدات ہیں ۔ وہی اخراجات ہیں ۔ حکومت کا خرچ زیادہ ہوتا جا رہا ہے جسکی وجہ سے اسکا اظہار کیا گیا ہے کہ ٹکسس کا اضافہ ہوگا ۔ راج پرمکھ کے اڈریس میں اور بجٹ اسپیچ میں منسٹر صاحب نے اس جانب اشارہ کیا ہے کہ ٹکسس میں اضافہ ہوگا ۔ یہ سوچنا چاہئے تھا کہ عوامی حکومت کے دور میں کسطرح اخراجات کو اڈجسٹ کر کے عوام کو فائدہ پہنچایا جاسکتا ہے ۔ کسطرح عوام کے مفاد کو آگے بڑھایا جاسکتا ہے ۔ یہ نظریہ ابتک مجھے حکومت میں نظر نہیں آرہا ہے ۔ کم از کم اتنی تو پابندی کی جاتی کہ پابند موازنہ رہتے ۔ جو موازنہ منظور ہوا ہے اوسی حد تک خرچ کیا جاتا ۔ لیکن ایسا نہیں کیا جاتا بلکہ سپلیمنٹری گرانٹس منظور کرائے جاتے ہیں ۔ وہ ایسے مدات بھی نہیں ہیں کہ اون سے کوئی غیر معمولی کام عوام کی بہبودی کے لئے کئے گئے ہیں ۔ ان حالات کو دیکھتے ہوئے میں یہ کہونگا کہ گورنمنٹ کی جو ذمہ دار مشنری ہے وہ سلف افیشینسی (Self-efficiency) سے کام نہیں کر رہی ہے ۔ بلکہ ماتحتین کے اشاروں پر چلتی ہے ۔ یہ میرا چارج (Charge) ہے حکومت پر ۔ ان باتوں پر توجہ کی جائے ۔ کارروائیوں کی گہرائیوں میں جائیں اور غور کریں کہ کس مد میں کتنی بچت ہوسکتی ہے تو یقیناً اخراجات میں کمی کا امکان ہے لیکن ایسا نہیں ہوتا بلکہ سکریٹری بجٹ پیش کرتے ہیں وہی لا کر یہاں اسمبلی میں پیش کردیا جاتا ہے ۔ چلو منظوری حاصل ہو جاتی ہے ۔ میں کہونگا کہ کم از کم سنجیدگی سے آئندہ سال کے بجٹ کے بارے میں سوچا جائے کہ اخراجات میں کیسے کمی ہوسکتی ہے ، بغیر ترقیاتی منصوبوں کو گھٹانے کے موازنے کو کسطرح ٹھیک کرسکتے ہیں ۔ ہر سال ہماری حکومت سنٹر کی امداد لیتی ہے اور سنٹر کی امداد پر چل رہی ہے ۔ لیکن امداد کا بھروسہ کب تک ۔ ہمیں سلف سفیشنٹ (Self-sufficient) ہونا چاہئے ۔ حیدرآباد کے کاشتکاروں کا جو چھوٹا طبقہ ہے انکا کیا حال ہے ؟ ہم ذرا دلچسپی لیں اور انکی تکالیف کو دور کرنے کے لئے رقم پرووائڈ کریں تو ہوسکتا ہے ۔ مگر اس طرف توجہ کم ہورہی ہے ۔ لاکھوں کروڑوں روپیہ صرف ہو رہا ہے لیکن جیسا کہ فائدہ ہونا چاہئے نہیں ہورہا ہے ۔ میں نے گذشتہ بجٹ سشن میں انگلینڈ کی بلڈنگ کے متعلق کہا تھا اور اسمبلی کے ممبروں نے بھی توجہ دلائی تھی کہ اس بلڈنگ سے کیا آمدنی ہو رہی ہے اور اسکے بالمقابل خرچ کیا ہورہا ہے ۔ ہم نے توجہ دلائی تھی کہ اس بلڈنگ کو فروخت کردیا جائے کیونکہ ہم کو رقومات کی ضرورت ہے ۔ نیشنل بلڈنگ ورکس کے لئے رقومات کی ضرورت ہے ۔ پیسہ کی کمی کی وجہ سے ہم کسی پلان کو عمل میں نہیں لاسکتے ۔ یہ بلڈنگ اوس زمانے کی یادگار ہے جبکہ حضور نظام کے عزیز و اقارب وہاں جا کر ٹھیرتے تھے ۔ اب اسکو فروخت کیا جاسکتا ہے ۔ اسکو فروخت کیا جائے تو سالانہ

نگہداشت کے اخراجات بھی بچ جائینگے۔ان اخراجات کے لئے بجٹ میں نہ کوئی پراویژن رہیگا اور نہ سپلیمنٹری ڈیمانڈ لانے کی ضرورت ہوگی ۔ اس لئے میں آنریبل چیف منسٹر سے عرض کرونگا کہ ایسے اخراجات کم کرنے کی کوشش کی جانی چاہئے ۔ سنہ ۱۹۵۵-۵۶ء کے بجٹ میں ایسے مدات نہ رکھے جائیں ۔ یہ درخواست کرتے ہوئے میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—मिस्टर स्पीकर सर, मैंने अेक छोटा सा कटमोशन पब्लिक सर्विस कमिशन के बारे में हाअुस के सामने रखा है। मै अपने मोशन को प्रेस (Press) करने-वाला नही हूं। सिर्फ अेक वाकया हाअुस के सामने रखना चाहता हूं। मैंने सुना है कि तीन सुपरिंटेंडिंग अिन्जीनिअर्स की जगहों के बारे में अेक मसला पब्लिक सर्विस कमिशन और हुकूमत के सामने काफी अर्से से जेरेबहस है। सुना गया है कि पब्लिक सर्विस कमिशन की राय किन को सुपरिंटेंडिंग अिन्जीनिअर्स कायम करना चाहिये अिस सिलसिले में ली गअी तो अुन्होंने अुनका पिछला रेकार्ड मंगवाकर अपनी राय हुकूमत के सामने पेश की। हुकूमत ने जो सिफारिशात की थी वह अलग थीं और पब्लिक सर्विस कमिशन की तरफ से जो सिफारिशात आअी है वह अलग है। यह मसला अेक जमाने से जेरेगोर है। मै हुकूमत से मालूम करना चाहता हू कि जब अिस तरह के मतभेद हुकूमत और पब्लिक सर्विस कमिशन में होते है तो क्या अुसको तय करने के लिये बीच का कोअी रास्ता है या नहीं, या यह चीज अिसी तरह से जमाने तक जेरेबहस ही रहेगी ? मै पब्लिक सर्विस कमिशन से भी यही ख्वाहिश रखूंगा कि जो व्हेकन्सीज (Vacancies) फिल अप (Fill up) नहीं हुअी और जिनके बारे में हुकूमत भी अुनकी सिफारिशात को नहीं मान सकती अुनके बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन फिर से अपने अुजरात पर गौर करे लेकिन अेक जमाने तक अैसे मसलों को अनिर्णित रखना ठीक नहीं है। या हुकूमत को चाहिये कि वह पब्लिक सर्विस कमिशन के सिफारिशात को क्यों नहीं मानती अिसको साफ तौर से हाअुस के सामने रख दें या अपने वजूहात पब्लिक सर्विस कमिशन के सामने पेश कर दें। मुझे जो कुछ मालूम हुआ है अुस पर से मै यकीनी तौर पर कोअी राय देना मुनासिब नहीं समझता लेकिन यह जरूर महसूस करता हू कि अिन मसलों का फैसला करने में डीले (Delay) किया जा रहा है। कहा जाता है कि जिन अिन्जीनिअर्स के बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन ने अपनी राय ताअीद में दी है अुनके रेकार्डस् अच्छे है और हुकूमत की तरफ से जिनके बारे में सिफारिशात की गअी है अुनके रेकार्डस् कुछ अच्छे नहीं हैं। अगर यही मसला जेरे गौर है कि रेकार्डस् अच्छे हैं या नहीं तो मैं समझता हू कि अैसे जायदादों को फुलफिल (Fulfil) करते वक्त सिर्फ अुनका पिछला रेकार्ड अच्छा है या नहीं अिसी सवाल को लेकर पब्लिक सर्विस कमिशन किसी नतीजे पर नहीं पहुच सकती और न अुसको पहुचना चाहिये। चीफ मिनिस्टर साहब हाअुस के सामने यह बता सकते हैं कि अिन जायदादों के सिलसिले में अुन तमाम लोगों का जिनकी सिफारिशात हुकूमत की तरफ से की गअी थीं या जिनके बारे में पब्लिक सर्विस कमिशन से सिफारिशात आअी है अुनका अक रेग्यूलर अिंटरव्ह्यू (Regular interview) पब्लिक सर्विस कमिशन की तरफ से लिया गया है या नहीं और अिन जायदादों को फिलअप (Fill up) करने के लिहाज से अुन लोगों के क्वालिफिकेशन्स (Qualifications) तजरूबा अुनका टेकनिकल नालेज (Technical knowledge) अिनके

बारे में भी सोंचा गया है या नही या सिर्फपिछले रेकार्डस् को ही अहमियत देकर यहमामला तयकिया जा रहा है। क्योंकि अगर सिर्फ रेकार्ड का ही ख्याल किया जाय तो अैसे अिन्जीनिअर्स जो निजाम के जमाने में काम करते थे और मुमकिन है निजाम के पैलेस में ही वे काम करते हों तो अुनके बारे में रिपोर्टस बहुत अच्छे हों सकते है। अैसी हालत में सिर्फ पिछले रेकार्ड की बिना पर ही अगर पब्लिक सर्विस कमिशन किसी मसले को तय करती है तो वह मै मुनासिब नहीं समझता। चूंकि यह सवाल हमारे सामने अब आया है मै गवर्नमेंट की राय पर कोअी नुक्ताचीनी नहीं करना चाहता लेकिन यह चाहता हू कि मुनासिब तौर पर अिस मसले को हल किया जाय और अिसमें मतभेद पैदा हो गया है तो हुकूमत अपने राय के साथ सब चीजों को पब्लिक सर्विस कमिशन के पास भेज दे और पब्लिक सर्विस कमिशन के लिये भी यह जरूरी हो जाता है कि अुन तमाम लोगों का अिंटरव्ह्यू लेकर वह अिसको हल करे। अिसके बारे में हुकूमत और पब्लिक सर्विस कमिशन दोनों की जो पालिसी आज है अुससे जो डिससेटिसफेक्शन (Dissatisfaction) फैला हुआ है अुसके लिहाज से मैं समझता हू कि अगर मुनासिब समझा जाय तो अिस सवाल को हाअुस के सामने साफ तौर से रखा जाय ताकि अिस हाअुस की मदद से भी अिस सवाल को किस तरह से हल किया जा सकता है। अिसके बारे में आपको हाअुस की मदत मिल सकती ह। म अुम्मीद करता हू कि चीफ मिनिस्टर अिस पर काफी रोशनी डालेंगे।

شری سی ایچ - وینکٹ رام راؤ - مسٹر اسپیکر سر- میں نے اپنا کٹ موشن لینڈ سنسس کی بد عنوانیوں کی روك تھام کے لئیے حکومت کو توجه دلانے کی غرض سے پیش کیا ھے - اس سے قبل بھی اس سلسلے میں ایک تحریک التواء لائی گئی تھی - ضلع کریم نگر میں تعلقه جات سلطان آباد اور کریم نگر میں لینڈ سنسس ورك کیا جارھا ھے - وھاں یه کام ھر تعلقه کے بٹیل پٹواریوں کے سپرد کیا گیا ھے - انہیں ھدایتیں دی گئی ھیں که کاسرا فارم اس طرح فل اپ (Fill up) کئے جائیں لیکن ان لوگوں نے رشوت کا بازار لگا رکھا ھے- اور غلط اندرا جات سے کافی فسادات بھی پیدا کررھے ھیں- حالانکه کاسرا فارم میں یه صاف طور پر ھے که اگر زمین پر کوئی قابض ھے تو ایک خانه میں اس کا نام درج کیا جائے- اگر زمین کے لئے کوئی ڈسپیوٹ ھے تو دوسرے خانه میں اس کا نام درج کیا جائے- جہاں پرانے قبضے ھیں ان کے بارے میں اسی طرح عمل کیا جائے - لیکن ان خانوں کے اندراج کے لئے پٹیل پٹواری پرانے قابضین سے بھی وثیقه جات یا رجسٹری شده بانڈز طلب کررھے ھیں - اور اس میں کئی بدعنوانیاں پیدا کی جارھی ھیں - ھم نے یه حالات ضلع کے متعلقه عہده داران کے پاس بھی پیش کئے که عوام کو اس طرح تکلیف دی جارھی ھے- لیکن اس کام کے لئے جو اسپیشل تحصیلدار وغیره مقرر کئے گئے ھیں وه ھمیں یه جواب دیتے ھیں که اس ضمن میں کسی موضع سے کوئی شکایت نہیں آئی اس لئے شکایت میں کوئی اصلیت نہیں ھے - ھم نے ان کے سامنے ان موضع کے ھزاروں افراد کو لا کر پیش کردیا اور کلکٹر صاحب کے پاس وه سب لوگ پیش کئے گئے - اس طرح زنده ثبوت عہده داران کے سامنے پیش کیا گیا -واقعه یه ھے که ایک ایک موضع سے لینڈ سنسس کے بارے میں ھزاروں روپئے نا جائز وصول کئے جارھے ھیں- اگر کسی شکایت کی شنوائی ھوتی

بھی ہے تو زیادہ سے زیادہ پٹیل پٹواری کو معطل کیا جاتا ہے - لیکن تھوڑے ہی دنوں کے بعد وہ پھر بحال ہو جاتا ہے اس لئے کہ سب لوگ آپس میں ملے ہوئے ہوتے ہیں - ہر موضع کا یہی حال ہے - البتہ کسی جگہ یہ بد عنوانیاں کم ہیں اور کسی جگہ زیادہ ہیں - کریم نگر کے اطراف میں ایسے کئی مواضعات ہیں کنڈا پور - رکما پور - رودرارم - بوتکور - چوپاڈنڈی - کولم کنٹہ - ان مواضعات میں ہزاروں روپیہ کی رقمیں وصول کی گئی ہیں جن میں پٹیل پٹواریوں گرداور اور تحصیلدار سب کے حصے ہیں - یہ سب اس میں انوالو (Involve) ہیں - ہم عوام کو لاکر ادھیکاریوں کے سامنے پیش کرتے ہیں تو زیادہ سے زیادہ کسی پٹواری کو معطل کیا جاتا ہے - میں آنریبل چیف منسٹر کی توجہ اس جانب دلانا چاہتا ہوں کہ جب تک اس سلسلہ میں اسٹرانگ میژرس اختیار نہ کئے جائیں حالت ٹھیک نہیں ہوسکتی - کیونکہ وہ معطل پٹواری بعد میں بحال ہو ہی جاتا ہے - ایک سوال کے جواب میں چیف منسٹر صاحب یہ کہتے ہیں کہ اگر کسی کو اعتراض ہو تو ۱۰ دن کے اندر وہ درخواست دیکر تصحیح کرواسکتا ہے - لیکن میں پوچھتا ہوں کہ کیا ہر شخص دیہات سے یہاں آکر درخواست پیش کر کے تصحیح کرواسکتا ہے - کیا وہ اتنا لنتھی پروسیجر (Lengthy procedure) اڈاپٹ (Adopt) کرسکتا ہے - وہ تو یہی چاہتا ہے کہ چار پیسے خرچ ہوں تو ہوں لیکن کسی طرح اس کا کام وہیں دیہات ہی میں تکمیل پا جائے - دیہاتیوں کی یہ سائیکالوجی ہوتی ہے - اس بات کو سب ہی مانتے ہیں - میں کہونگا کہ آپ کے پاس - سی آئی - ڈی ہے - پولس ہے - آپ اس بدعنوانی کے انسداد کے لئے اس کو کیوں استعمال نہیں کرتے - پولس اور سی-آئی-ڈی کے ذریعہ ان ادھیکاریوں کو گرفتار کیجئے جو اس میں انوالو ہیں - اور انہیں سخت سے سخت سزا دیجائے - جب تک کہ اسٹرانگ میژرس ایسی بدعنوانیاں پھیلانے والوں کے خلاف استعمال نہ کئے جائیں حالات سدھر نہیں سکتے - محض (۱۰) دن کی مدت درخواست پیش کرنے کے لئے دیکر یہ سمجھنا کہ سب کام بالکل ٹھیک طور پر انجام پارہے ہیں یہ غلطی ہے - اس کی بجائے خاطیوں کے خلاف سخت اسٹپس لئے جانے چاہئیں -

* شری بی-ڈی- دیشمکھ - مسٹر اسپیکر سر - میں نے ڈیمانڈ نمبر (۳) سے متعلق جو کٹ موشن رکھا ہے اس کی غرض یہ ہے کہ ایک زمانے سے اس ہاؤس سے یہ مطالبہ کیا جا رہا تھا کہ حکومت جو بھی کمیشنس یا بورڈس بناتی ہے ان میں ملک کی مختلف سیاسی پارٹیوں اور اداروں کو انکی تعداد اور قوت کے لحاظ سے ریپریزنٹیشن ملنا ضروری ہے - اس اصول کے بارے میں سخت سے سخت تنقید ہوئی - میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی ہاؤس نے کئی بار اسکا وعدہ بھی کیا کہ اس اصول کو ملحوظ رکھا جائیگا - لیکن افسوس ہے کہ عملی میدان میں لینڈ کمیشن ٹیننسی کمیشن یا دوسرے کمیشنس میں اپوزیشن پارٹیز یا دوسری پارٹیوں کو کوئی ریپریزنٹیشن نہیں ملا - لینڈ امپروومنٹ بورڈ کے بارے میں آنریبل منسٹر نے یہ وعدہ کیا تھا کہ یہ ٹیکنیکل کمیٹی ہے - اس کے لئے ماہرین فن چاہے وہ ہاؤس کے باہر کے ہی کیوں نہوں مقرر کئے جاسکتے ہیں -

لیکن معلوم ہوا ہے کہ اس ہاؤس کی رولنگ پارٹی ہی میں سے چند لوگوں کو نامزد کیا جارہا ہے - حال ہی میں لینڈ کمیشن کی جو تشکیل ہوئی اسکی تمثیل میں ہاؤس کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں - یہ ہاؤس جو ایک اعلیٰ جمہوری ادارہ سمجھا جاتا ہے اور جسکو پورے ملک کی نمائندگی کا حق دیا گیا ہے محض بھیک کے طور پر لینڈ کمیشن میں اپوزیشن کو ایک سیٹ دینے کا اعلان کیا گیا ہے - لیکن ڈائرکٹ الکشن ہونے کی وجہ سے اپوزیشن کے دو ارکان منتخب ہوکر کمیشن میں آجاتے ہیں - اس کا صدمہ میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی ہاؤس کو ضرور ہوگا - اگر آپ یہ سمجھتے ہیں کہ آزادی رائے یا پروپورشنل ریپریزنٹیشن کا حق دیا جائے تو اس سے وہ لوگ منتخب ہوکر آجائینگے جنہیں آپ نہ چاہتے ہوں یہ خیال جمہوریت کی سراسر توہین ہے - لینڈ کمیشن کے سلسلہ میں جو نامنیشنس ہوئے ہیں اس بارے میں یہ کہا گیا تھا کہ باہر کے لوگ بھی ہوسکتے ہیں - ۷ میں سے رولنگ پارٹی کے ۳ ارکان تو منتخب کئے گئے - اور باہر کے ۴ ارکان کو موقع مل سکتا ہے - یہ دعویٰ کرنا کہ ہاؤس کے ارکان ہی زیادہ واقفیت رکھتے ہیں انہیں ہی لینا چاہئے یہ صحیح نہیں ہے - محض رولنگ پارٹی کو خوش کرنے کے لئے نامنیشن کا طریقہ ہر دو کے لئے نامناسب ہے اور یہ جذبہ جمہوریت کے منافی ہے - اس بارے میں ہاؤس کے ارکان نے مختلف اوقات میں اپنے خیالات ظاہر کئے - اور میں سمجھتا ہوں کہ امپرومنٹ بورڈ کے بارے میں جسکا ابھی اعلان نہیں ہوا ہے لیڈر آف دی ہاؤز مسئلہ کو مناسب طور پر حل کرینگے اور آئندہ جو الکشنس اسمبلی کے ہونے والے ہیں اس میں ڈائرکٹ الکشن کا جو طریقہ ہے اسکے بجائے پروپورشنل ریپریزنٹیشن کا طریقہ اختیار کیا جائیگا - ان چند چیزوں کے سلسلہ میں میں نے یہ کٹ موشن دیا تھا اور میں سمجھتا ہوں کہ لیڈر آف دی ہاؤز اس بارے میں ہاؤز کو مطمئن کرنے کی کوشش کرینگے -

شری بی - رام کشن راؤ - سر - جو کٹ موشنس اب پیش ہوئے ہیں ان میں سے ہر ایک کے بارے میں میں چند الفاظ کہنا چاہتا ہوں - سب سے پہلا کٹ موشن آنریبل ممبر فار منتھنی کا ہے جنہوں نے جی - اے - ڈی (G.A.D.) کی ورکنگ (Working) پر بہت کچھ تنقید کی ہے - پہلے تو انہوں نے یہ فرمایا کہ جو سپلیمنٹری گرانٹس (Supplementary grants) پیش کئے جارہے ہیں ان کو پہلے سے انٹیسپیٹ (Anticipate) کیا جا سکتا تھا، یہ اضافہ کوئی ناگہانی حادثات کی وجہ سے نہیں ہوا، یہ سب چیزیں پہلے سے نہ سوچنے اور سوچنے کی نااہلیت کی وجہ سے پیش ہورہی ہیں - میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر نے ان سب مدات کو پڑھنے کی تکلیف گوارا نہیں فرمائی ورنہ ان کو معلوم ہوجاتا کہ یہ ناگہانی کی تعریف میں آسکتے ہیں - غیر ضروری اخراجات نہیں کئے گئے اور اخراجات میں کوئی اضافہ نہیں کیا گیا بلکہ ایسے مدات کے لئے سپلیمنٹری گرانٹس مانگے جارہے ہیں جو بعد کے واقعات کی وجہ سے نہ گزیر ہوگئے - آنریبل ممبر کو ایک اور بھی مغالطہ ہوا ہے - انہوں نے غالباً یہ سمجھا کہ ...

بہت سے آفس کے لئے کرایہ پر مکانات لئے ہیں اور اس کے لئے یہ مطالبات کئے جا رہے ہیں۔ چنانچہ میں ان کے الفاظ سے یہی سمجھتا ہوں کہ انہوں نے ان الفاظ کو نہیں پڑھا یا پڑھنے کے بعد سمجھے نہیں۔ واقعہ یہ ہے کہ اس گنجائش میں بہت بڑے اضافہ کی ضرورت اسلئے پیش آئی کہ گورنمنٹ نے اپنے پچھلے حکم کی رو سے اس میں بہت کمی کی تھی۔ اس کے بعد نان گزٹیڈ ملازمین نے بہت بڑا احتجاج کیا اور اس احتجاج کی تائید اس ایوان کے بعض معزز اراکین نے بھی کی کہ ایکدم هاؤز رنٹ الونس(House Rent Allowance) کم کردیا گیا ہے؛ گورنمنٹ کو اس پر نظر ثانی کرنی چاہیئے۔ چنانچہ بہت سے لوگوں کے کرایہ مکان میں جو کمی کی گئی تھی یا کرایہ مکان بندھوا تھا ان کو دینے کا بعد میں تصفیہ ہوا اس تصفیہ کی وجہ سے یہ مدات یہاں پر پیش ہوئے ہیں جو هاؤز رنٹ کے لئے ہیں۔

شری جی۔ سری راملو - الونس نہیں لکھا گیا۔

شری بی۔ رام کشن راؤ- ہے۔ صاف ہے۔ رسٹوریشن آف هاؤز رنٹ الونس ٹو اسٹاف (Restoration of house rent allowance to staff) اس کے معنی یہی ہیں۔ اگر آنریبل ممبر کو شبہ ہوتا تو وہ یہ پوچھ لیتے کہ اس کے کیا معنی ہوتے ہیں۔ جب وہ کٹ موشن پیش کررہے ہیں تو یہ پوچھ لیتے کہ هاؤز رنٹ الونس کے کیا معنی ہوتے ہیں۔ ہر ڈپارٹمنٹ میں فینانس ڈپارٹمنٹ۔ ہوم ڈپارٹمنٹ کامرس اینڈ انڈسٹریز ڈپارٹمنٹ اور لیگل ڈپارٹمنٹ میں جن ملازمین کا هاؤز رنٹ الونس بند کیا گیا تھا ان کو پھر دینا پڑا۔ میں اس کی صراحت کردینا چاہتا ہوں۔

دوسری چیز یہ ہے کہ اسی آنریبل ممبر نے کفایت شعاری کے بارے میں تلقین فرمائی ہے اور یہ کہا ہے کہ کفایت شعاری کی ضرورت ہے۔ ڈپٹی منسٹرس کی طرف اشارہ کیا گیا اور کہا گیا ہے کہ گھر کے سنبھالنے میں ہی تکلیف ہے۔ یہ ظاہر ہے کہ جب تک خود اپنا گھر نہ سنبھالیں کوئی بات نہیں ہوسکتی۔ حکومت کو بھی اپنا گھر پہلے سنبھالنا پڑتا ہے لیکن ڈپٹی منسٹرس کے تعلق سے جو کہا گیا اس کا کفایت شعاری سے کوئی تعلق نہیں ہے۔ آنریبل منسٹرس کے لئے جو رقم گذشتہ سال منظور ہوئی تھی اس میں کچھ گھٹاؤ ہوا تھا تو اس سال یہ رقم بڑھائی گئی ہے۔ ۱۳ منسٹرس کے لئے جو اخراجات آپ نے منظور کئے تھے اس میں سے ۸ ڈپٹی منسٹرس کے اخراجات کو منہا کیا جائے تو کچھ بچت بچ سرکار ہوتی ہے۔ کفایت شعاری کی حدتک اتناہی جواب دینا کافی ہے۔ دوسری اور چیزوں کے تعلق سے بھی کفایت شعاری کا خیال رکھا گیا ہے اور جو زائد عہدے بتلائے گئے ہیں اور جنہیں ہم نے بھی محسوس کیا ؛ ان کی تخفیف کی گئی ہے۔ میں مثالیں بتلاسکتا ہوں۔۔ آرکیٹکٹ آفس ہے اور ایک دو اور جگہیں ہیں۔ وہاں بڑی جگہ بھی کم کی گئی ہے اور چھوٹی جگہ بھی کم کی گئی ہے۔

انسپکٹر آف آفس (Inspector of offices) کے سلسلہ میں جو تنقید کی گئی ہے میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر کو انسپکٹر آف آفسس کے فنکشنس کیا ہیں

انکا علم نه هونےکی وجه سےکی گئی ہے۔ اس کی غرض یه دیکھنا نہیں ہے کہ لوگ دفتر کو وقت پر آتے ہیں یا نہیں۔ چائے پیتے ہیں۔ ٹیبل پر پیر ڈالتے ہیں یا سوجاتے ہیں، بلکه انسپکشن (Inspection) اس غرض سے کرتے ہیں که جو اسٹاف ہے وہ کافی ہے یا ناکافی ہے۔ زائد لوگ تو کام نہیں کررہے ہیں۔ اس میں کس قدر تخفیف کی گنجائش ہے ۔ کسی خاص دفتر کے طریقه کار میں کیا نقص ہے۔ طریقه کار میں تبدیلی کرنے کی وجه سے ایفیشنسی (Efficiency) میں زیادتی ہوسکتی ہے یا نہیں ۔ اس قسم کا معائنه کرکے جی۔ اے۔ ڈی کو رپورٹ کرتے ہیں۔ آیا بزنس (Business) کے طریقوں میں تبدیلی کریں یا لوگوں میں کمی کریں ۔ اس قسم کے کام کے لئے انسپکٹر آف آفسس مقرر ہے۔ جب اس ہاؤز میں انسپکٹر آف آفسس سے متعلق سوالات کئے گئے تھے تو پچھلی مرتبه میں نے بیان کیا تھا که ایفیشنسی میں کتنی ترقی ہوسکتی ہے۔ کئی مرتبه ان کے سجیشنس (Suggestions) پر ہم نے عمله کی تقسیم کی ہے اگر کسی صیغه میں زیادہ کام ہو تو وہاں لوگوں میں اضافه کرنے یا مقررہ لوگوں ہی کو ری آرگنائز کرنے سے ہم کو بڑی مدد ملی ہے اور انسپکٹر آف آفسس کے عہدے کو قائم رکھنے کی ضرورت گورنمنٹ بڑی شدت سے محسوس کرتی ہے اس لئے اس کو قائم رکھا گیا ہے۔ اور اس پر جو رقم خرچ کی جاتی ہے وہ رائیگاں نہیں جائیگی ۔ میں اس کا یقین دلانا چاہتا ہوں ۔

اب جمعه کی نماز کے لئے وقت ملتا ہے ۔ یه چزیں ایسی ہیں که کچھ حیدرآباد کی روایات میں داخل ہیں ۔ بعض لوگ انکو اچھی روایات سمجھتے ہیں اور بعض لوگ انکو بری روایات سمجھتے ہیں ۔ اس میں اختلاف رائے بھی ہوسکتا ہے ۔ لیکن بات یه ہے که جہاں تک میرا تجربه ہے پچھلے زمانه کے مقابله میں اب کم ہے ۔ اس میں شک نہیں که ڈیڑھ یا دو گھنٹے تک نماز کے لئے لیتے ہیں لیکن یه کوئی کلیه نہیں ہے که جمعه کے روز ہمارے عہدہ دار یا انکے ماتحتین دو بجے آتے ہیں ۔ کہیں کسی جگه ایسا تجربه آنریبل ممبر کو ہوا ہو تو اسکو مستثنیات میں سے سمجھنا چاہئے ۔ میں یقین کے ساتھ کہه سکتا ہوں که وقت کی پابندی جہاں تک ممکن ہے کی جاتی ہے ۔ یه حکم دیا گیا ہے که آدھا گھنٹه دیر سے آئیں تو دیر حاضری کا عمل کیا جائے ۔ میں نے سکریٹریٹس (Secretariats) میں اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے که دیر حاضری کا عمل ہوتا ہے ۔ تو یه چیز روز بروز روبه تنزل ہے اور مجھے امید ہے که کچھ عرصے کے بعد جب زیادہ سختی برتی جائیگی ، جیسی که آنریبل ممبر چاہتے ہیں تو وہ بھی دور ہوجائیگی ۔

چیف سکریٹری کے بارے میں آنریبل ممبر نے اعتراض کیا که باہر کے آدمی ہیں ۔ بالکل صحیح ہے ۔ یه سوچ سمجھکر لائے گئے ہیں ۔ ایک طرف تو لوگوں میں تساہل ۔ جمعه کی نماز کا پڑھنا یا وقت کا چرانا ۔ ایک ہی زبان سے کہا گیا اور دوسری طرف کلکٹرس کانفرنس کا اشارہ دیکر بھی کہا گیا ۔ کلکٹرس کانفرنس بلانے کی ابتدا

سی اچھی باتیں انکو بتلائی گئیں - لیکن ہمارے یہاں کے لوکل عہدہ داروں کی نسبت تو انکی یہ رائے ہے کہ ایک کان سے سنکر دوسرے کان سے نکالدیتے ہیں - دن میں تین چار مرتبہ چائے پیتے ہیں - ٹیبل پر پیر ڈالکر لیٹتے ہیں اور دوسری طرف ایک ایفیشنٹ (Efficient) آدمی کو جو سخت آدمی ہے اور جو کڑا ڈسپلن (Discipline) رکھتا ہے - اسکے ڈسپلن کی وجہ سے وہ مقبول نہیں ہے اور اسکی نسبت ذرا برے خیالات ہیں تو اس اکیلے آدمی کو نکالنے کی بھی تلقین کی جاتی ہے - تو یہ ایک آدمی ، کیونکہ باہر سے آیا ہے اسلئے باہر کی اور اندر کی بحث کی جاسکتی ہے - لیکن ہم نے یہ اصول رکھا ہے کہ جو مقامی عہدہ دار مل سکتے ہیں انکو لیا جائے - میں اس کلیہ سے بھی متفق نہیں ہوں کہ ہمارے مقامی عہدہ دار ناکارہ ہیں - پابندی نہیں کرتے - تساہل کرتے ہیں - بہت سے اچھے لوگ بھی ہیں میں اسکو کلیہ کی شکل دیکر کہنا مناسب نہیں سمجھتا - اب رہی بات باہر کے آدمیوں کی تو وہ لائے ہی جائینگے - جب بدلے ہوئے حالات کے تحت مقامی آدمی ذمہ دار عہدوں کے لئے قابل یا موزوں نہیں سمجھے جاسکتے تو پھر باہر سے لینے پر کوئی امتناع نہ ہونا چاہئے - اور باہر سے مطلب یہ ہے کہ آئی - اے - ایس کے قیام کے بعد ہر جگہ سے عہدہ دار آسکتے ہیں - چنانچہ گورنمنٹ آف انڈیا اور دوسرے اسٹیٹس کی حکومتوں کا آج یہ رجحان ہے کہ جہاں تک ممکن ہوسکے ایک اسٹیٹ کے عہدہ دار دوسرے اسٹیٹس میں جاکر کام کریں - گورنمنٹ آف انڈیا نے ہم سے یہ کہا ہے کہ کچھ سنٹرل گورنمنٹ کے اور دوسرے اسٹیٹ گورنمنٹس کے جو آئی - اے - ایس عہدہ دار کام کرتے ہیں انکو یہاں لیں چنانچہ انٹیگریشن آف سرویس (Integration of services) کے اصول کے مدنظر یہ کیا گیا ہے یہ اصول ہے کہ یہاں کے لوگ باہر جائیں اور باہر کے یہاں آئیں - اسلئے کوئی اصولی اختلاف نہ ہونا چاہئے اور میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ممبر جنہوں نے تنقید کی وہ اس سے انکار نہیں کرسکتے کہ سرویسس کا ری آرگنائزیشن کرنے اور پہلے کی نسبت زیادہ ڈسپلن قائم رکھنے میں چیف سکریٹری نے حکومت کی بڑی مدد کی ہے - ایسی صورت میں مجھے اسپر تنقید کرنے کی کوئی گنجائش معلوم نہیں ہوتی -

تیسری چیز یہ ہے کہ اسی آنریبل ممبر نے یہ اعتراض کیا کہ درخواستیں دیجاتی ہیں اور ریپریزنٹیشن (Representation) کیا جاتا ہے تو انکے کوئی جوابات نہیں دئے جاتے - اگر ہاؤز ہر ایک منسٹر کے لئے دس دس ہزار روپیہ اسٹیشنری میں اضافہ کرتا ہے تو بشکل اکناالجمنٹ (Acknowledgement) جواب بھیجدیا جائیگا - اگر دس دس ہزار کی یہ اسٹیشنری دیتے ہیں تو میں اسکا بھی آپکو یقین دلاتا ہوں - ہر ایک منسٹر کے پاس روزانہ تقریباً ۱۰۰ درخواستیں آتی ہیں - ان انڈویجویل درخواستوں کا جواب دینا ناممکن ہے اور اگر دیا بھی جائے تو اتنی اسٹیشنری اور ٹکٹ صرف کرکے جواب دینے سے کوئی فائدہ نہیں ہوگا کیونکہ ان پر منسٹر کے کوئی قطعی احکام نہیں ہوتے بلکہ کلکٹر متعلقہ یا ہیڈ آف دی ڈپارٹمنٹ

کو " فارڈسپوزل "(For disposal) " فارانکوائری " (For inquiry) " فار رپورٹ " (For report) ایسے آرڈرس دئے جاتے ہیں -

اب اصل بات یہ کہی گئی کہ تبادلہ کیا جاتا ہے - کہا گیا کہ ایک جگہ پر ۱۰ سال تک عہدہداروں کو رکھا جاتا ہے اور دوسری جگہ دو تین دن میں تبادلہ ہو جاتا ہے - وہ چندو لعل کا زمانہ تھا جب تبادلہ نہ ہوتا تھا - البتہ جلد ہی تبادلہ ہونے کی بعض مثالیں میرے سامنے ہیں لیکن شاذ و نادر صورتوں میں ہی ایسا کیا جاتا ہے - یہ ضرور ہے کہ یہ بری عادت ہماری حکومت کے عہدہداروں میں ہی نہیں بلکہ ہر جگہ موجود ہے کہ اپنی ترقی اور تبادلہ کے لئے منسٹروں اور بالا دست عہدہداروں کے پاس اور بعض مرتبہ اس ھاؤز کے آنریبل ممبرس کے پاس ترقی اور تبادلہ کے لئے کوشش کرتے ہیں - میں نہیں کہتا کہ ہمیشہ آنریبل ممبرس کے پاس کوشش کرتے ہیں لیکن جہاں تک انکا تعلق ہے وہ لوگ ضرور اس امر کی کوشش کرتے ہیں کہ کسی آنریبل ممبر کے تھرو (Through) یا کسی اور شخص کے تھرو عہدہ داران بالا دست اور منسٹروں تک پہنچ جائیں اور اپنے تبادلوں کے سلسلہ میں کوشش کریں - یہ مرض ضرور ہے لیکن اس مرض کو حکومت کی جانب سے انکریج (Encourage) نہیں کیا جا رہا ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ آنریبل ھاؤز بھی اسے جانتا ہے - جہاں تک اسکا تعلق ہے عوام کا جنرل کنڈکٹ (General conduct) بڑھ جانے ؛ اسکا معیار بڑھ جانے سے ہی یہ چیز کم ہوسکتی ہے - تبادلہ کی حد تک ہم نے جو جنرل اصول قائم کئے ہیں وہ یہ ہیں کہ محض کسی کی شکایات پر تبادلہ نہیں کیا جاتا - جیسا کہ آنریبل ممبر فار منتھنی نے فرمایا محض کسی شکایت کی بناء پر کسی عہدہدار کا تبادلہ نہیں کیا جاسکتا - اور خود جیسا کہ انہوں نے یہ فرمایا اگر ایسا کیا گیا تو یہ مرض ایک جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہوگا - یہ صحیح اصول نہیں ہے - ممکن ہے کہ بعض آنریبل ممبرس کی شکایت پر بعض عہدہ داروں کے تبادلے نہ ہوئے ہوں - تجربہ تو یہ ہے کہ بعض وقت یہ شکایتیں بے اصول ہوا کرتی ہیں - اور محض ایسی شکایتوں کی بناء پر تبادلے کرنے سے اڈ منسٹریشن کا موریل (Morale) گرجاتا ہے اور نقصان ہوتا ہے - اس وجہ سے شکایتوں کی بناء پر تبادلہ نہیں ہوا کرتا - بعض وقت ایسا ہوتا ہے کہ کسی جگہ کسی کا تبادلہ کیا جاتا ہے تو وہ تبادلہ اگر وہاں کی کسی پارٹی یا لوگوں کے خلاف پڑتا ہے تو پھر اس کی بھی ان کی جانب سے شکایت ہوتی ہے - یہ چیزیں عام طور پر چل رہی ہیں - حکومت غور کررہی ہے کہ اس کو کس طرح گھٹایا جاسکتا ہے - ہم چند اصول قائم کرنا چاہتے ہیں لیکن ہر اصول میں مستثنیات ہوا کرتے ہیں - بعض وقت انتظامی ضروریات کے مد نظر ایک جگہ سے دوسری جگہ پر جلد جلد تبادلے کرنے کی ضرورت ہوتی ہے - میں نے کلکٹرس کانفرنس میں اس کی ہدایت دی اور عام احکام جاری کئے ہیں کہ کسی مقام سے کسی شخص کا تبادلہ کیا جانے والا ہو تو کلکٹر سے ایستمزاج کیا جائے - اون کی رائے کے خلاف تبادلہ نہ کیا جائے - بعض تبادلے اون کی واقفیت

خلاف ہورہے ہیں تو اون کو شکایت رہتی ہے ۔ ان چیزوں کی روک تھام کی جارہی ہے اور اون کو دور کرنے کے بارے میں میں وشواس دلاسکتا ہوں ۔ اس کٹ موشن کے سلسلہ میں تو میرا یہ جواب تھا ۔ دوسرے کٹ موشن کے سلسلہ میں ، میں مختصر طور پر عرض کروں گا۔ ایک آنریبل ممبر نے کفایت شعاری اور دوسری چیزوں کے بارے میں بیان کیا ہے ۔ اون کا جواب دینے کی ضرورت نہیں ہے ۔ حیدرآباد ہاؤز جو لندن میں ہے اس کو حکومت رکھنا نہیں چاہتی بلکہ اس کو فروخت کرکے رقم حاصل کرلینا چاہتی ہے ۔ آج کل اوس میں پرنسس آف برار اور اون کے لڑکے رہا کرتے ہیں ۔ اور جہاں تک میں جانتا ہوں وہاں کے معمولی اخراجات اور اسٹیبلشمنٹ چارجز (Establishment Charges) وہ خود برداشت کرتے ہیں وہاں دو عمارتیں تھیں ایک تو بیچ دی گئی ہے اور دوسری کو بھی فروخت کرنے کی کارروائی قریب قریب مکمل ہوگئی ہے ۔ ایک دو مہینوں میں اوس کے متعلق ٹرمس (Terms) تکمیل پاجائینگے ۔ اور پھر ان دو مکانات کے متعلق ہماری کوئی ذمہ داری نہیں رہیگی ۔ اس سلسلہ میں دو ہزار کا جو سپلیمنٹری ڈیمانڈ کیا جارہا ہے وہ ٹیکسس کی ادائی کے سلسلہ میں ہے ۔ یہ مد اوس وقت اس وجہ سے اومٹ (Omit) کیا گیا تھا کہ اوس کو بیچنے کا ارادہ تھا ۔ گفتگو ہوچکی تھی لیکن ٹیکس ادا کرنا تھا ۔ اب اس کے لئے موازنہ میں جو گنجائش مانگی جارہی ہے وہ گزشتہ سال کے ٹیکس کے سلسلہ میں ہے ۔

پبلک سرویس کمیشن کے سلسلہ میں آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے جو تنقید کی ہے میں سمجھتا ہوں کہ وہ محض سنی سنائی باتوں پر مبنی ہے ۔ انہوں نے یہ کہا کہ پبلک سروس کمیشن کی سفارشات کو نظر انداز کرکے حکومت کوئی بے اصولی کارروائی کرنا چاہتی ہے یا کررہی ہے یا کرنے پر آمادہ ہے ۔ میں نہیں جانتا کہ اون کے معلومات کے سورسس (Sources) کیا ہیں لیکن یہ یقین دلانا چاہتا ہوں کہ پبلک سروس کمیشن اور گورنمنٹ ان دونوں میں کوئی شدید اختلاف رائے نہیں ہے ۔ صرف سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے پوسٹس کے بارے میں تھوڑا سا اختلاف موجود ہے ۔ لیکن کسی اور ڈپارٹمنٹ میں تقررات کے سلسلہ میں کوئی شدید اختلاف موجود نہیں ہے ۔ چنانچہ پبلک سروس کمیشن کے متعلق گزشتہ جو رپورٹ ہاؤس کے سامنے پیش ہوئی اوس کے دیکھنے سے آنریبل ممبرس کو اطمینان ہوسکے گا ۔ جہاں اون کی سفارشات کو حکومت قبول کرسکتی تھی قبول کیا گیا اور اون پر عمل بھی کیا گیا ۔ ان خاص تین سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے بارے میں جو اطلاع آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن کو ملی ہے وہ غلط ہے ۔ جن تین سپرنٹنڈنگ انجینیرس کے بارے میں پبلک سروس کمیشن نے اپنی رائے دی تھی اون میں سے دو کے متعلق حکومت نے سفارشات کو قبول کرلیا ۔ تیسرے کے بارے میں اختلاف رائے ہے ۔ چنانچہ استفسار کا جواب دوبارہ بھیجا گیا ہے ۔ وہ اسٹرانگ کیس ہے ۔ مجھے یقین ہے کہ پبلک سروس کمیشن حکومت کی رائے سے متفق ہوجائیگی ۔ تیسرے سپرنٹنڈنگ انجینیر اوس کام کے ماہر نہیں ہیں ، بلکہ وہ انجینیرنگ کے ایک دوسرے شعبہ کے ماہر ہیں اس لئے امید ہے کہ پبلک سروس

کمیشن حکومت کی رائے سے متفق ہوجائیگی اگر نہ ہوگی تو پھر پبلک سروس کمیشن اور حکومت کے مابین اختلافات کا تصفیہ کرنے کے لئے رولس کی رو سے جو طریقہ اختیار کیا جانا چاہئیے اختیار کیا جائیگا - بجز اس کے کہ پبلک سروس کمیشن حکومت کے ریزنایبل ریپریزنٹیشن (Reasonable Representation) کو ماننے سے انکار کرے پبلک سروس کمیشن کی رائے سے اتفاق کیا جاتا ہے - لیکن جہاں کوئی بہت بڑا نقصان ہوتا ہو یا ہونے کا امکان ہو یا حکومت کی کارکردگی پر اثر پڑتا ہو تو حکومت پبلک سروس کمیشن کی رائے سے اتفاق نہیں کرسکتی - میں آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن کو یقین دلانا چاہتا ہوں کہ حکومت پبلک سروس کمیشن کی رائے سے (۹۹) فیصد کیسس میں اتفاق کرتی ہے - اس کے بارے میں کسی قسم کے شبہ کی ضرورت نہیں ہے -

تیسری چیز لینڈ سنسس کمیشن اسکیم کے بارے میں ہے ، اس پر تبصرے کرتے ہوے ایک آنریبل ممبر نے کریم نگر کا حوالہ دے کر کہا کہ وہاں ولیج آفیسرس اور پٹیل پٹواریوں کا کرپشن جاری ہے - اس کی شکایت آنریبل ممبر نے میرے پاس تحریراً بھیجی تھی - پہلے جب شکایت وصول ہوئی تو کلکٹر کو انکوائری (Enquiry) کرنے کے لئے لکھا گیا تھا - دوسری بار جب شکایت وصول ہوئی کہ کلکٹر صاحب معلومات ہونے کے باوجود بھی ڈراسٹک اسٹپس (Drastic steps) نہیں لے رہے ہیں تو ریوینیو بورڈ کے احکام کی بناء پر خود لینڈ سنسس کے اسپیشل آفیسر کریم نگر کا دورہ کرکے معلومات حاصل کرنے والے ہیں - اون کی رپورٹ کی بناء پر کارروائی کی جائیگی اگر یہ معلوم ہو کہ وہاں پٹیل پٹواریوں کی جانب سے اس قسم کی باتیں ہورہی ہیں تو حکومت ڈراسٹک اسٹپس لینے تیار ہے -

لینڈ کمیشن اور لینڈ امپروومنٹ بورڈ کے نامینیشنس اور الکشنس کے بارے میں ایک آنریبل ممبر نے تبصرہ کیا ہے - وہ ایک ان کالڈ فار (Uncalled for) اور غیر ضروری تبصرہ تھا - واقعہ یہ ہے کہ ایکٹ کی رو سے تین ممبروں کو الکٹ کرنے کا اختیار اسمبلی کو دیا گیا ہے - اور جیسا کہ خود انہوں نے فرمایا پوری آزادی کے ساتھ اون کو الکٹ کیا گیا اور اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ خود انہوں نے اس پر اطمینان اور خوشی ظاہر کی - اپوزیشن نے اپنی طرف سے جو دو ممبرس بھیجے تھے وہ الکٹ ہوئے - اب اس پر تنقید کرنے کی ضرورت نہیں تھی بلکہ اس پر اظہار تشکر کیا جاتا تو مناسب تھا -

لینڈ کمیشن کے سلسلہ میں نامینیشن ہوا ہے - آپ نے یہ کوشش کی کہ نامینیشن کا ادھیکار گورنمنٹ کو نہیں ہونا چاہئیے بلکہ الکشن ہی ہونا چاہئیے - نامینیشن کا گورنمنٹ کو جو ادھیکار ہے اوس کی بناء پر گورنمنٹ نے اپنی سمجھ بوجھ سے تین چار آدمیوں کو نامینیٹ کیا ہے - اوس میں سے ایک تو آفیشیل ممبر ہوں گے اور وہ ریوینیو بورڈ کے ممبر ہوں گے - ان کا تعلق چونکہ لینڈ ریوینیو سے ہے اس لئے اون ہی کو نامینیٹ کیا گیا - باقی تین آنریبل ممبرس اس ہاؤس کے ہیں - جن کے بارے میں گورنمنٹ کو کم از کم یہ احساس تھا کہ وہ ان معاملات میں کافی دلچسپی رکھتے ہیں اور کافی معلومات بھی رکھتے ہیں - کافی

معلومات رکھنے کا نبوت انہوں نے اس سے قبل سلکٹ کمیٹی اور دوسرے مقامات پر دیا ہے۔ یہ حکومت کا ایقان ہے اور اس وجہ سے حکومت نے ان لوگوں کو نامینیٹ کیا۔ جیسا کہ میں نے پہلے ہی کہا ہے اس میں اس قسم کی گنجائش تھی کہ حکومت چاہتی تو اس هاؤز کے باہر سے بھی لوگوں کو نامینیٹ کرسکتی تھی۔ لیکن خود هاؤس نے اس سلسلہ میں ایک پریسیڈنٹ اور ایک نظیر قائم کردی اور حکومت نے بھی اوس کی تقلید کی۔ یعنی هاؤس نے خود هاؤس کے آنریبل ممبرس کا ہی انتخاب کیا اس لئے حکومت نے بھی اس کی تتبع کی۔ بدقسمتی سے اس هاؤس کے آنریبل ممبرس نے باہر سے کسی دوسرے آدمی کو چن کر بھیجنے کی تکلیف گوارا نہیں فرمائی اور هاؤس کے کسی آنریبل ممبر نے کسی باہر کے آدمی کا نام نامینیشن کے لئے پیش نہیں کیا.................

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:– महादेवसिंग साहेव को नामिनेट नहीं किया गया।

شری بی۔ رام کشن راؤ۔ وہ وتھ ڈرا (Withdraw) کرلیا گیا انہوں نے خود اپنا نام وتھ ڈرا کرلیا۔ اگر هاؤس اون کو چن کر لاتا تو میں ویلکم (Welcome) کرتا۔ اگر میں اوس کے متعلق ناراض ہوتا تو پھر مجھ پر الزام لگایا جاسکتا تھا۔ چونکہ هاؤس نے خود باہر کے آدمی کو نہیں چنا تھا اس لئے حکومت نے بھی اس کی تقلید کی۔ جو رجحان هاؤز کا ہوتا ہے اوس کی تقلید حکومت کو کرنی پڑتی ہے۔ حکومت خود اپنے آپ کو اسٹرانگ نہیں سمجھتی جب تک کہ هاؤس کی تقلید نہ کرے جب هاؤس کا رجحان یہ پایا گیا کہ وہ باہر کے لوگوں کا انتخاب پسند نہیں کرتا تو حکومت نے بھی نامینیشن (Nomination) کے سلسلہ میں اس کی تقلید کی۔ جن کے متعلق حکومت یہ سمجھتی تھی کہ وہ نامینیٹ کئے جانے کے قابل ہیں اون کو چنا اور کیبینٹ نے بھی اس چناؤ کو منظور کیا۔ اس وجہ سے اس امر پر مزید تبصرہ کرنے کی ضرورت معلوم نہیں ہوتی۔

لینڈ امپرومنٹ بورڈ (Land Improvement Board) کی حد تک میں یہ کہوں گا کہ جمہوریت کے تمام اصولوں کی پوری پوری پابندی کرتے ہوئے اس کے چناؤ اور نامینیشنس ہوں گے۔ اس کا میں وشواس دلانا چاہتا ہوں۔ جو چاہے اس کے لئے بطور کھڑا ہوسکتا ہے۔ جو شخص جسکو چاہے اپنا ووٹ دے سکتا ہے۔ جو پارٹی آسکتی ہے آئیگی۔ اور اس پر پورا پورا عمل کیا جائیگا۔ البتہ وہاں جو نامینیشن ہوں گے وہ متعلقہ محکموں کے آفیسرس کے ہوں گے۔ یعنی فارسٹ آفیسر۔ اگریکلچرڈپارٹمنٹ کے افیسرس وغیرہ۔ اس کے متعلق تو آپ کو زیادہ تنقید کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ تین ممبروں کو هاؤس الکٹ کریگا۔ اور اس کی پوری پوری آزادی رہے گی۔ میں سمجھتا ہوں کہ تمام اعتراضات کا میں نے جواب دیدیا ہے اس لئے امید کرتا ہوں کہ میرے ڈیمانڈس منظور کئے جائیں گے۔

Demand No. 8 — General Administration —Rs. 2,08,400.

Working of G.A.D.

Shri G. Sreeramulu : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Problem of Hyderabad House in London.

Shri Katta Ram Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Public Service Commission

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Land Census Scheme

Shri Ch. Venkatrama Rao : On the assurance of the Chief Minister, I do not wish to press my cut motion. I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Land Commission and Land Improvement Board

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 3 be reduced by Re. 1".

The Motion was negatived.

Mr. Speaker : I shall now put the demand to vote.

The question is :

"That a further sum not exceeding Rs. 2,03,400 under Demand No. 3 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st March, 1954. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh".

The Motion was adopted.

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock, on Thursday, the 4th March, 1954.